

Time Allowed :3 Hours 15 Minutes	Maximum Marks :70	Total Questions :30
----------------------------------	-------------------	---------------------

General Instructions

Read the following instructions very carefully and strictly follow them:

1. प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्न-पत्र पढ़ने के लिए नियत किए गए हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
2. यह प्रश्न-पत्र दो खण्डों - खण्ड अ तथा खण्ड ब में विभाजित है।
3. इस प्रश्न-पत्र के खण्ड अ में 20 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं, जिसमें दिए गए चार विकल्पों में से सही विकल्प का चयन करके ओ.एम.आर. शीट पर लिखें। उत्तर-पत्रक पर नीली अथवा काले बाल प्वाइंट पेन से सही विकल्प वाले गोले को अच्छी तरह काला कर दें।
4. खण्ड अ के बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु प्रत्येक प्रश्न के लिए 1 अंक निर्धारित है। बहुविकल्पीय प्रश्नों हेतु नकारात्मक अंकन की व्यवस्था नहीं है। अतः सभी प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए। ओ.एम.आर. शीट पर उत्तर देने के पश्चात संबंधित गोले को काटें नहीं तथा इरेज़र एवं व्हाइटनर का प्रयोग न करें।
5. प्रत्येक प्रश्न के सम्मुख उनके निर्धारित अंक दिए गए हैं।
6. खण्ड ब में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं। इसके लिए कुल 50 अंक निर्धारित हैं।
7. खण्ड ब के प्रश्नों के उत्तर यथासंभव क्रमवार लिखने का प्रयास कीजिए। जो प्रश्न न आता हो उस पर समय नष्ट मत कीजिए।

Section - A

1. शुक्लयुगीन लेखक हैं :

- (A) राम प्रसाद निरञ्जनी
- (B) माखन लाल चतुर्वेदी
- (C) यशपाल
- (D) सदल मिश्र

Correct Answer: (B) माखन लाल चतुर्वेदी

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में शुक्लयुग (लगभग 1920-1940 ई.) के लेखक की पहचान करने के लिए कहा गया है।

Step 2: Key Concept:

हिन्दी साहित्य के इतिहास में विभिन्न युगों का वर्गीकरण और उन युगों के प्रमुख लेखकों की जानकारी होना आवश्यक है। शुक्लयुग को हिन्दी गद्य के विकास में एक महत्वपूर्ण चरण माना जाता है, जिसका नामकरण आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के नाम पर हुआ।

Step 3: Detailed Explanation:

(A) राम प्रसाद निरञ्जनी और (D) सदल मिश्र - ये दोनों लेखक हिन्दी गद्य के आरम्भिक काल (फोर्ट विलियम कॉलेज के समय) के हैं, जो शुक्लयुग से बहुत पहले का है।

(C) यशपाल - ये शुक्लोत्तर युग (प्रगतिवादी युग) के प्रमुख लेखक हैं, इनका लेखन काल मुख्यतः शुक्लयुग के बाद का है।

(B) माखन लाल चतुर्वेदी - ये एक प्रसिद्ध कवि, लेखक और पत्रकार थे। यद्यपि वे छायावाद युग के कवि के रूप में अधिक जाने जाते हैं, उनका सक्रिय लेखन काल शुक्लयुग के समकालीन था और वे उस युग के एक महत्वपूर्ण साहित्यिक व्यक्तित्व थे। उन्हें 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से भी जाना जाता है। दिए गए विकल्पों में से, वे ही शुक्लयुग के प्रतिनिधि लेखक हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, दिए गए विकल्पों में माखन लाल चतुर्वेदी शुक्लयुगीन लेखक हैं।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य के प्रमुख युगों (जैसे - भारतेन्दु युग, द्विवेदी युग, शुक्लयुग, शुक्लोत्तर युग) और उनके प्रमुख लेखकों की एक सूची बनाकर याद करें। यह परीक्षा में बहुत सहायक होता है।

2. 'गुनाहों का देवता' रचना की विधा है :

- (A) कहानी
- (B) नाटक
- (C) उपन्यास
- (D) आत्मकथा

Correct Answer: (C) उपन्यास

Solution:**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में धर्मवीर भारती की प्रसिद्ध रचना 'गुनाहों का देवता' की साहित्यिक विधा पूछी गई है।

Step 2: Detailed Explanation:

'गुनाहों का देवता' हिन्दी साहित्य की एक अत्यंत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण रचना है। इसके लेखक धर्मवीर भारती हैं। यह चंदर और सुधा के प्रेम की एक मार्मिक कहानी है, जिसे एक उपन्यास के रूप में लिखा गया है। यह कहानी नहीं है, न ही नाटक या आत्मकथा है। यह एक पूर्ण उपन्यास है जो अपने

भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक चित्रण के लिए जाना जाता है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'गुनाहों का देवता' की विधा उपन्यास है।

Quick Tip

प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाओं के लेखक और उनकी विधा (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि) को हमेशा याद रखें। 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' धर्मवीर भारती के दो सबसे प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

3. किशोरी लाल गोस्वामी की रचना है :

- (A) 'सरस्वती'
- (B) 'राग दरबारी'
- (C) 'दुलाई वाली'
- (D) 'इन्दुमती'

Correct Answer: (D) 'इन्दुमती'

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा रचित कृति की पहचान करनी है।

Step 2: Detailed Explanation:

- (A) 'सरस्वती' - यह एक प्रसिद्ध पत्रिका थी, जिसके सम्पादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी थे।
- (B) 'राग दरबारी' - यह श्रीलाल शुक्ल का प्रसिद्ध व्यंग्य उपन्यास है।
- (C) 'दुलाई वाली' - यह बंग महिला (राजेन्द्र बाला घोष) द्वारा लिखित एक प्रसिद्ध कहानी है।
- (D) 'इन्दुमती' - यह किशोरी लाल गोस्वामी द्वारा लिखी गई कहानी है, जिसे हिन्दी की पहली कहानी माना जाता है। इसका प्रकाशन 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'इन्दुमती' किशोरी लाल गोस्वामी की रचना है।

Quick Tip

हिन्दी साहित्य में "प्रथम" रचनाओं (जैसे प्रथम कहानी, प्रथम उपन्यास, प्रथम नाटक) और उनके लेखकों की सूची याद करना बहुत महत्वपूर्ण है। 'इन्दुमती' को अक्सर हिन्दी की पहली कहानी का दर्जा दिया जाता है।

4. 'ध्रुवस्वामिनी' के लेखक हैं :

- (A) जयशंकर प्रसाद
- (B) जगदीश चन्द्र माथुर
- (C) राम कुमार वर्मा
- (D) मोहन राकेश

Correct Answer: (A) जयशंकर प्रसाद

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में प्रसिद्ध नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के लेखक का नाम पूछा गया है।

Step 2: Detailed Explanation:

'ध्रुवस्वामिनी' हिन्दी के छायावादी युग के प्रमुख स्तम्भ जयशंकर प्रसाद द्वारा लिखा गया एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है। यह उनका अंतिम नाटक है और इसे हिन्दी नाटक के विकास में एक मील का पत्थर माना जाता है। यह नाटक गुप्त वंश के शासक रामगुप्त और चन्द्रगुप्त के समय की कहानी पर आधारित है और नारी चेतना की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है।

अन्य विकल्प:

जगदीश चन्द्र माथुर - 'कोणार्क', 'पहला राजा' जैसे नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं।

राम कुमार वर्मा - एकांकी के लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे 'दीपदान'।

मोहन राकेश - 'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस' जैसे नाटकों के लिए प्रसिद्ध हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'ध्रुवस्वामिनी' के लेखक जयशंकर प्रसाद हैं।

Quick Tip

जयशंकर प्रसाद के प्रमुख नाटकों जैसे 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'अजातशत्रु' और 'ध्रुवस्वामिनी' को याद रखें। ये अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

5. 'संस्कृति और सभ्यता' निबन्ध के निबन्धकार हैं :

- (A) रामदास गौड़
- (B) श्यामसुन्दर दास
- (C) रामचन्द्र शुक्ल
- (D) डॉ. नगेन्द्र

Correct Answer: (B) श्यामसुन्दर दास

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'संस्कृति और सभ्यता' नामक निबन्ध के लेखक का नाम पूछा गया है।

Step 2: Detailed Explanation:

'संस्कृति और सभ्यता' नामक प्रसिद्ध निबन्ध के लेखक डॉ. श्यामसुन्दर दास हैं। वे हिन्दी के प्रकांड विद्वान, आलोचक और निबंधकार थे। उन्होंने नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि इस शीर्षक से मिलते-जुलते निबंध अन्य लेखकों ने भी लिखे हैं (जैसे रामधारी सिंह 'दिनकर' की कृति 'संस्कृति के चार अध्याय'), परन्तु 'संस्कृति और सभ्यता' निबंध सीधे तौर पर श्यामसुन्दर दास से सम्बंधित है।

Step 3: Final Answer:

अतः, इस निबंध के निबंधकार श्यामसुन्दर दास हैं।

Quick Tip

कुछ निबंधों के शीर्षक बहुत समान हो सकते हैं। इसलिए, लेखक और उनके निबंध के सटीक शीर्षक को ध्यान से याद करना महत्वपूर्ण है।

6. 'भावविलास' के रचयिता हैं :

- (A) भूषण
- (B) केशव
- (C) मतिराम
- (D) देव

Correct Answer: (D) देव

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में रीतिकालीन काव्य ग्रंथ 'भावविलास' के रचयिता का नाम पूछा गया है।

Step 2: Key Concept:

यह प्रश्न हिन्दी साहित्य के रीतिकाल से संबंधित है। रीतिकाल के प्रमुख कवियों और उनकी रचनाओं का ज्ञान आवश्यक है।

Step 3: Detailed Explanation:

'भावविलास' रीतिकाल के प्रसिद्ध कवि देव (पूरा नाम देवदत्त) की रचना है। कहा जाता है कि उन्होंने मात्र सोलह वर्ष की आयु में इस ग्रंथ की रचना की थी। देव रीतिकाल की रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रमुख आचार्य कवि माने जाते हैं। 'अष्टयाम', 'सुजानविनोद', 'काव्यरसायन' उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ

हैं।

अन्य विकल्प:

भूषण - 'शिवराज भूषण', 'शिवा बावनी' के लिए प्रसिद्ध हैं।

केशव - 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया', 'रामचंद्रिका' के लिए प्रसिद्ध हैं।

मतिराम - 'रसराज', 'ललित ललाम' के लिए प्रसिद्ध हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'भावविलास' के रचयिता देव हैं।

Quick Tip

रीतिकाल के प्रमुख कवियों (केशव, बिहारी, भूषण, देव, घनानंद) और उनकी कम से कम दो-तीन प्रमुख रचनाओं को अवश्य याद कर लें।

7. रीतिमुक्त काव्यधारा की रचना है :

- (A) सुजानसागर
- (B) बिहारी सतसई
- (C) ललित ललाम
- (D) काव्य निर्णय

Correct Answer: (A) सुजानसागर

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में रीतिकाल की 'रीतिमुक्त' काव्यधारा की रचना की पहचान करने के लिए कहा गया है।

Step 2: Key Concept:

रीतिकाल को तीन प्रमुख धाराओं में बांटा गया है : रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, और रीतिमुक्त।

रीतिबद्ध: वे कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथों (काव्य के नियमों) की रचना की, जैसे केशव, मतिराम।

रीतिसिद्ध: वे कवि जिन्होंने लक्षण ग्रंथ नहीं लिखे, पर काव्य रचना में उनका पालन किया, जैसे बिहारी।

रीतिमुक्त : वे कवि जिन्होंने काव्य-परंपराओं से हटकर स्वतंत्र रूप से प्रेम की पीर का वर्णन किया, जैसे घनानंद, आलम, बोधा।

Step 3: Detailed Explanation:

(A) सुजानसागर - यह रीतिमुक्त धारा के सर्वप्रमुख कवि घनानंद की रचना है। उन्होंने अपनी प्रेमिका सुजान के लिए इस काव्य की रचना की।

(B) बिहारी सतसई - यह रीतिसिद्ध कवि बिहारी की एकमात्र रचना है।

(C) ललित ललाम - यह रीतिबद्ध कवि मतिराम की रचना है।

(D) काव्य निर्णय - यह रीतिबद्ध कवि भिखारीदास की रचना है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'सुजानसागर' रीतिमुक्त काव्यधारा की रचना है।

Quick Tip

रीतिकाल की तीनों धाराओं (रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, रीतिमुक्त) के कम से कम दो-दो प्रमुख कवियों और उनकी एक-एक रचना का नाम याद रखें। यह वर्गीकरण बहुत महत्वपूर्ण है।

8. 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष है :

- (A) 1943
- (B) 1951
- (C) 1979
- (D) 1985

Correct Answer: (B) 1951

Solution:**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में 'दूसरा सप्तक' के प्रकाशन का वर्ष पूछा गया है।

Step 2: Key Concept:

अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन) के संपादन में चार 'सप्तक' प्रकाशित हुए, जो आधुनिक हिन्दी कविता (प्रयोगवाद और नई कविता) के महत्वपूर्ण संग्रह हैं। इनके प्रकाशन वर्ष अक्सर पूछे जाते हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

चारों सप्तकों के प्रकाशन वर्ष इस प्रकार हैं:

तार सप्तक - 1943

दूसरा सप्तक - 1951

तीसरा सप्तक - 1959

चौथा सप्तक - 1979

प्रश्न में 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष पूछा गया है, जो कि 1951 है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'दूसरा सप्तक' का प्रकाशन वर्ष 1951 है।

Quick Tip

चारों सप्तकों के प्रकाशन वर्ष (1943, 1951, 1959, 1979) और उनके संपादक (अज्ञेय) का नाम याद रखें। कभी-कभी प्रत्येक सप्तक के कवियों के नाम भी पूछ लिए जाते हैं।

9. 'प्रगतिवाद' युग के कवि हैं :

- (A) शिवमंगल सिंह 'सुमन'
- (B) प्रभाकर माचवे
- (C) नरेश मेहता
- (D) जगदीश गुप्त

Correct Answer: (A) शिवमंगल सिंह 'सुमन'

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से 'प्रगतिवाद' युग के कवि की पहचान करनी है।

Step 2: Key Concept:

प्रगतिवाद (लगभग 1936-1943) हिन्दी साहित्य का वह दौर है जब कविता पर मार्क्सवादी विचार-धारा का प्रभाव पड़ा और उसमें शोषितों, गरीबों और किसानों की बात की गई।

Step 3: Detailed Explanation:

- (A) शिवमंगल सिंह 'सुमन' - ये प्रगतिवादी काव्यधारा के एक प्रमुख कवि हैं। 'मिट्टी की बारात', 'हिल्लोल' इनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।
- (B) प्रभाकर माचवे और (C) नरेश मेहता - ये दोनों 'तार सप्तक' के कवि हैं और प्रयोगवाद से संबंधित हैं।
- (D) जगदीश गुप्त - ये 'नयी कविता' के प्रवर्तक कवियों में से एक हैं और उन्होंने 'नयी कविता' पत्रिका का संपादन भी किया।

Step 4: Final Answer:

अतः, शिवमंगल सिंह 'सुमन' प्रगतिवाद युग के कवि हैं।

Quick Tip

आधुनिक हिन्दी कविता के विभिन्न आंदोलनों (छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नयी कविता) के प्रमुख कवियों की पहचान करना सीखें। केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन और शिवमंगल सिंह 'सुमन' प्रमुख प्रगतिवादी कवि हैं।

10. महादेवी वर्मा की रचना है :

- (A) त्रिधारा
- (B) वीणा
- (C) पथ के साथी

(D) गुंजन

Correct Answer: (C) पथ के साथी

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से महादेवी वर्मा द्वारा रचित कृति की पहचान करनी है।

Step 2: Detailed Explanation:

(A) त्रिधारा - यह सुभद्रा कुमारी चौहान की रचना है।

(B) वीणा - यह सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह है।

(D) गुंजन - यह भी सुमित्रानंदन पंत का काव्य संग्रह है।

(C) पथ के साथी - यह महादेवी वर्मा द्वारा लिखा गया एक संस्मरण-रेखाचित्र है, जिसमें उन्होंने अपने समकालीन साहित्यकारों जैसे निराला, पंत, प्रसाद आदि का वर्णन किया है। महादेवी वर्मा के अन्य प्रमुख रेखाचित्र/संस्मरण 'अतीत के चलचित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' हैं।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'पथ के साथी' महादेवी वर्मा की रचना है।

Quick Tip

छायावाद के चार स्तंभों - प्रसाद, पंत, निराला, और महादेवी - की प्रमुख काव्य और गद्य रचनाओं को अलग-अलग याद करें। महादेवी वर्मा अपने काव्य (यामा, नीरजा) के साथ-साथ अपने गद्य (रेखाचित्र और संस्मरण) के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

11. 'विन्ध्य के वासी उदासी तपोव्रतधारी महाबिनु नारि दुःखारे' पंक्ति में कौन-सा रस है ?

(A) करुण रस

(B) हास्य रस

(C) शृंगार रस

(D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (B) हास्य रस

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

दी गई काव्य पंक्ति में निहित रस की पहचान करनी है।

Step 2: Key Concept:

रस का अर्थ है काव्य से मिलने वाला आनंद। हास्य रस का स्थायी भाव 'हास' होता है। जब किसी व्यक्ति

या वस्तु की विचित्र वेशभूषा, वाणी, या क्रियाकलाप को देखकर हृदय में हँसी का भाव उत्पन्न होता है, तो वहाँ हास्य रस होता है।

Step 3: Detailed Explanation:

पंक्ति का अर्थ है : "विंध्याचल पर्वत पर रहने वाले तपस्वी, जो महान तप का व्रत धारण किए हुए हैं, बिना नारी के बहुत दुःखी हैं।"

यहाँ तपस्वियों की स्थिति का वर्णन मजाकिया ढंग से किया गया है। तपस्वी मोह-माया से दूर होते हैं, परन्तु यहाँ उन्हें नारी के बिना दुःखी बताया गया है। उनकी तपस्या और उनकी इच्छा के बीच का यह विरोधाभास हँसी उत्पन्न करता है। 'दुःखारे' शब्द का प्रयोग यहाँ करुणा के लिए नहीं, बल्कि उनकी दयनीय और हास्यास्पद स्थिति को दर्शाने के लिए किया गया है। यह तुलसीदास की 'रामचरितमानस' की पंक्ति है, जहाँ गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या के उद्धार की बात सुनकर विंध्याचल के ऋषि प्रसन्न होते हैं कि अब राम यहाँ भी पत्थर की शिलाओं को नारी बना देंगे। इस विचार से ही हँसी आती है।

Step 4: Final Answer:

अतः, इस पंक्ति में हास्य रस है।

Quick Tip

रस की पहचान करते समय केवल शब्दों के शाब्दिक अर्थ पर न जाएँ, बल्कि पूरे संदर्भ को समझें। कभी-कभी शोक या दुःख जैसे शब्दों का प्रयोग हास्य उत्पन्न करने के लिए भी किया जा सकता है, जैसा कि इस उदाहरण में है।

12. 'जहाँ उपमेय में उपमान की समानता प्रकट की जाए' वहाँ अलंकार होता है :

- (A) उपमा
- (B) रूपक
- (C) उत्प्रेक्षा
- (D) सन्देह

Correct Answer: (A) उपमा

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में उस अलंकार की परिभाषा दी गई है जहाँ उपमेय और उपमान में समानता दिखाई जाती है और हमें उस अलंकार का नाम बताना है।

Step 2: Key Concept:

उपमेय : जिसकी तुलना की जाए (जैसे - मुख)।

उपमान : जिससे तुलना की जाए (जैसे - चन्द्रमा)।

Step 3: Detailed Explanation:

(A) **उपमा अलंकार** : जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे प्रसिद्ध व्यक्ति या वस्तु से गुण, धर्म या किर्या के आधार पर की जाती है, तो वहाँ उपमा अलंकार होता है। इसमें समानता वाचक शब्दों (जैसे - सा, सम, सरिस, जैसा) का प्रयोग होता है। यह दी गई परिभाषा से मेल खाता है। उदाहरण: 'मुख चन्द्रमा-सा सुन्दर है'।

(B) **रूपक अलंकार** : यहाँ उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप होता है, यानी उपमेय को उपमान का रूप ही दे दिया जाता है। उदाहरण: 'मुख-चन्द्रमा'।

(C) **उत्प्रेक्षा अलंकार** : यहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना की जाती है। इसमें 'मनु', 'मानो', 'जनु', 'जानो' जैसे शब्दों का प्रयोग होता है।

(D) **सन्देह अलंकार** : जब सादृश्य के कारण उपमेय में उपमान का सन्देह बना रहे और निश्चय न हो पाए।

Step 4: Final Answer:

अतः, दी गई परिभाषा उपमा अलंकार की है।

Quick Tip

उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षा अलंकारों के बीच के सूक्ष्म अंतर को समझें। उपमा में 'तुलना/समानता' होती है (सा, जैसा), रूपक में 'अभेद आरोप' होता है (उपमेय ही उपमान है), और उत्प्रेक्षा में 'संभावना' होती है (मानो, जानो)।

13. 'सोरठा छन्द' के दूसरे और चौथे चरण में मात्राएँ होती हैं :

- (A) 11
- (B) 16
- (C) 12
- (D) 13

Correct Answer: (D) 13

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में सोरठा छंद के दूसरे और चौथे चरण (सम चरणों) में मात्राओं की संख्या पूछी गई है।

Step 2: Key Concept:

सोरठा एक अर्धसम मात्रिक छंद है। यह दोहा छंद का ठीक उल्टा होता है। इसमें चार चरण होते हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

सोरठा छंद के लक्षण:

- प्रथम और तृतीय चरण (विषम चरण): इनमें 11-11 मात्राएँ होती हैं।
- द्वितीय और चतुर्थ चरण (सम चरण): इनमें 13-13 मात्राएँ होती हैं।
- सम चरणों के अंत में गुरु-लघु (ऽ।) आते हैं।

प्रश्न में दूसरे और चौथे चरण की मात्राएँ पूछी गई हैं, जो कि 13 होती हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, सोरठा छंद के दूसरे और चौथे चरण में 13 मात्राएँ होती हैं।

Quick Tip

दोहा और सोरठा एक दूसरे के उल्टे होते हैं। - ****दोहा :** 13, 11, 13, 11 मात्राएँ - ****सोरठा :** 11, 13, 11, 13 मात्राएँ यदि आप एक को याद कर लेते हैं, तो दूसरा स्वतः याद हो जाएगा।

14. 'अपव्यय' शब्द में उपसर्ग जुड़ा है :

- (A) अ
- (B) उप
- (C) अप
- (D) अधि

Correct Answer: (C) अप

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'अपव्यय' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग को पहचानने के लिए कहा गया है।

Step 2: Key Concept:

उपसर्ग वे शब्दांश होते हैं जो किसी मूल शब्द के आरंभ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

'अपव्यय' शब्द का विच्छेद करने पर:

अपव्यय = अप + व्यय

यहाँ 'व्यय' एक मूल शब्द है जिसका अर्थ है 'खर्च'। 'अप' एक उपसर्ग है जिसका अर्थ 'बुरा', 'हीन', या 'विपरीत' होता है। इस प्रकार 'अपव्यय' का अर्थ होता है 'बुरा खर्च' या 'फिजूलखर्ची'।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'अपव्यय' शब्द में 'अप' उपसर्ग जुड़ा है।

Quick Tip

किसी शब्द में उपसर्ग पहचानने के लिए, शब्द से उपसर्ग को हटाने के बाद बचे हुए शब्द का सार्थक होना आवश्यक है। यहाँ 'व्यय' एक सार्थक शब्द है।

15. 'माता-पिता' में समास है :

- (A) कर्मधारय
- (B) द्विगु
- (C) बहुव्रीहि
- (D) द्वन्द्व

Correct Answer: (D) द्वन्द्व

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'माता-पिता' शब्द में प्रयुक्त समास का प्रकार पूछा गया है।

Step 2: Key Concept:

द्वन्द्व समास : जिस समस्त पद के दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो, वह द्वन्द्व समास कहलाता है।

Step 3: Detailed Explanation:

'माता-पिता' का समास विग्रह करने पर 'माता और पिता' होता है।

यहाँ 'माता' (पूर्व पद) और 'पिता' (उत्तर पद) दोनों ही पद प्रधान हैं, किसी का भी महत्व कम नहीं है। विग्रह करने पर बीच में 'और' संयोजक का प्रयोग हो रहा है। ये सभी लक्षण द्वन्द्व समास के हैं।

अन्य विकल्पों की जाँच:

(A) कर्मधारय : इसमें एक पद विशेषण और दूसरा विशेष्य होता है।

(B) द्विगु : इसमें पहला पद संख्यावाची होता है।

(C) बहुव्रीहि : इसमें दोनों पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'माता-पिता' में द्वन्द्व समास है।

Quick Tip

द्वन्द्व समास को पहचानने का एक सरल तरीका यह है कि इसके दोनों पदों के बीच में प्रायः योजक चिह्न (-) लगा होता है और ये पद एक-दूसरे के पूरक या विलोम होते हैं।

16. 'समुद्र' शब्द का पर्यायवाची शब्द नहीं है :

- (A) सागर
- (B) पारावार
- (C) महीपति
- (D) जलधि

Correct Answer: (C) महीपति

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से वह शब्द चुनना है जो 'समुद्र' का पर्यायवाची नहीं है।

Step 2: Detailed Explanation:

हम प्रत्येक विकल्प का अर्थ देखेंगे :

- (A) सागर : यह समुद्र का एक सामान्य और प्रसिद्ध पर्यायवाची है।
- (B) पारावार : यह भी समुद्र का एक पर्यायवाची शब्द है।
- (D) जलधि : 'जल' (पानी) को 'धि' (धारण करने वाला) अर्थात् जल को धारण करने वाला, यह भी समुद्र का पर्यायवाची है। (अन्य उदाहरण: वारिधि, पयोधि)।
- (C) महीपति : इस शब्द का विच्छेद है 'मही' + 'पति'। 'मही' का अर्थ है 'पृथ्वी' और 'पति' का अर्थ है 'स्वामी'। अतः 'महीपति' का अर्थ है 'पृथ्वी का स्वामी' अर्थात् 'राजा'। यह समुद्र का पर्यायवाची नहीं है।

Step 3: Final Answer:

अतः, 'महीपति' शब्द 'समुद्र' का पर्यायवाची नहीं है।

Quick Tip

पर्यायवाची शब्दों को याद करते समय शब्दों के मूल अर्थ को समझने का प्रयास करें। जैसे 'जलधि', 'वारिधि', 'नीरधि' में 'धि' का अर्थ 'धारण करने वाला' है, जो समुद्र के लिए प्रयुक्त होता है। इसी तरह 'जलज', 'वारिज', 'नीरज' में 'ज' का अर्थ 'जन्म लेने वाला' है, जो कमल के लिए प्रयुक्त होता है।

17. 'सौ' का तत्सम शब्द है :

- (A) शत
- (B) सव
- (C) सत
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (A) शत

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'सौ' शब्द का तत्सम रूप पूछा गया है।

Step 2: Key Concept:

तत्सम शब्द : संस्कृत भाषा के वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के प्रयोग में लाए जाते हैं, तत्सम शब्द कहलाते हैं।

तद्भव शब्द : संस्कृत के वे शब्द जो कुछ रूप परिवर्तन के साथ हिन्दी में प्रयोग होते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

यहाँ 'सौ' एक तद्भव शब्द है।

Step 3: Detailed Explanation:

संस्कृत में संख्या '100' के लिए 'शतम्' या 'शत' शब्द का प्रयोग होता है। यही शब्द हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के 'शत' के रूप में प्रयोग किया जाता है, जैसे 'शतक' (सौ का समूह), 'शताब्दी' (सौ वर्षों का समय)। 'सौ' शब्द इसी 'शत' का तद्भव रूप है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'सौ' का तत्सम शब्द 'शत' है।

Quick Tip

प्रमुख संख्याओं के तत्सम रूप याद करना उपयोगी होता है, जैसे : सात (सप्त), आठ (अष्ट), सौ (शत), हजार (सहस्र)।

18. 'तेषाम्' में विभक्ति और वचन है :

- (A) पञ्चमी विभक्ति, द्विवचन
- (B) सप्तमी विभक्ति, एकवचन
- (C) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन
- (D) चतुर्थी विभक्ति, एकवचन

Correct Answer: (C) षष्ठी विभक्ति, बहुवचन

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में संस्कृत शब्द 'तेषाम्' की विभक्ति और वचन की पहचान करने के लिए कहा गया है।

Step 2: Key Concept:

यह प्रश्न संस्कृत व्याकरण के 'तत्' (वह) सर्वनाम शब्द रूप से संबंधित है। 'तत्' शब्द के पुल्लिङ्ग और

नपुंसकलिंग के रूप एक समान चलते हैं (प्रथमा और द्वितीया को छोड़कर)।

Step 3: Detailed Explanation:

'तत्' सर्वनाम (पुल्लिङ्ग) का षष्ठी विभक्ति का रूप इस प्रकार है :

- एकवचन : तस्य (उसका)
- द्विवचन : तयोः (उन दोनों का)
- बहुवचन : तेषाम् (उन सबका)

स्पष्ट रूप से, 'तेषाम्' 'तत्' सर्वनाम के पुल्लिङ्ग रूप में षष्ठी विभक्ति, बहुवचन है। इसका अर्थ 'उनका' या 'उन लोगों का' होता है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'तेषाम्' में षष्ठी विभक्ति और बहुवचन है।

Quick Tip

संस्कृत के कुछ महत्वपूर्ण शब्द रूपों जैसे - तत्, किम्, अस्मद्, युष्मद्, राम, हरि, गुरु, नदी आदि की विभक्तियों को याद कर लें। ये अक्सर परीक्षाओं में पूछे जाते हैं।

19. 'तुमसे सोया नहीं जा सकता' वाक्य में वाच्य है :

- (A) कर्तृवाच्य
- (B) भाववाच्य
- (C) कर्मवाच्य
- (D) इनमें से कोई नहीं

Correct Answer: (B) भाववाच्य

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

दिए गए वाक्य 'तुमसे सोया नहीं जा सकता' में वाच्य (voice) का प्रकार बताना है।

Step 2: Key Concept:

वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह पता चलता है कि वाक्य में क्रिया का मुख्य विषय कर्ता, कर्म, या भाव है।

- **कर्तृवाच्य** : क्रिया का संबंध सीधे कर्ता से होता है। (जैसे - तुम नहीं सो सकते।)
- **कर्मवाच्य** : क्रिया का संबंध कर्म से होता है। इसमें सकर्मक क्रिया होती है। (जैसे - तुम्हारे द्वारा पत्र लिखा जाता है।)
- **भाववाच्य** : क्रिया का संबंध भाव से होता है। इसमें क्रिया अकर्मक होती है, सदा पुल्लिङ्ग, एकवचन में रहती है और कर्ता के साथ 'से' या 'के द्वारा' विभक्ति होती है। यह अक्सर असमर्थता प्रकट करने के लिए प्रयोग होता है।

Step 3: Detailed Explanation:

वाक्य 'तुमसे सोया नहीं जा सकता' का विश्लेषण:

1. क्रिया 'सोना' अकर्मक है।
 2. कर्ता 'तुम' के साथ 'से' विभक्ति लगी है।
 3. क्रिया 'जा सकता' भाव को प्रधानता दे रही है और असमर्थता का बोध करा रही है।
 4. क्रिया अन्य पुरुष, पुल्लिंग, एकवचन में है।
- ये सभी लक्षण भाववाच्य के हैं।

Step 4: Final Answer:

अतः, इस वाक्य में भाववाच्य है।

Quick Tip

भाववाच्य को पहचानने की सरल ट्रिक: कर्ता के साथ 'से' लगा होगा, क्रिया अकर्मक होगी और वाक्य अधिकतर नकारात्मक (नहीं) होगा, जो असमर्थता दर्शाएगा। जैसे - 'मुझसे चला नहीं जाता', 'पक्षी से उड़ा नहीं जाता'।

20. विकारी पद नहीं है :

- (A) गाय
- (B) सभा
- (C) प्रतिदिन
- (D) रमेश

Correct Answer: (C) प्रतिदिन

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से उस पद (शब्द) को पहचानना है जो विकारी नहीं है, अर्थात् अविकारी है।

Step 2: Key Concept:

प्रयोग के आधार पर शब्द दो प्रकार के होते हैं:

1. **विकारी शब्द** : वे शब्द जिनका रूप लिंग, वचन, कारक आदि के कारण बदल जाता है। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द होते हैं।
2. **अविकारी शब्द (अव्यय)**: वे शब्द जिनका रूप किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलता। क्रिया-विशेषण, संबंधबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक अविकारी शब्द होते हैं।

Step 3: Detailed Explanation:

- (A) गाय : यह एक संज्ञा है। इसका रूप वचन के अनुसार बदलता है (गाय, गायें)। अतः यह विकारी है।
- (B) सभा : यह एक संज्ञा है। इसका रूप वचन के अनुसार बदलता है (सभा, सभाएँ)। अतः यह विकारी है।

है।

(D) **रमेश** : यह एक व्यक्तिवाचक संज्ञा है। कारक के अनुसार इसका रूप बदल सकता है (रमेश ने, रमेश को)। अतः यह विकारी है।

(C) **प्रतिदिन** : यह एक क्रिया-विशेषण (अव्यय) है, जो क्रिया के होने का समय बताता है (काल-वाचक)। इसका रूप लिंग, वचन या कारक के अनुसार कभी नहीं बदलता। हम कहते हैं 'वह प्रतिदिन आता है', 'वे प्रतिदिन आते हैं', 'वह प्रतिदिन आती है'। हर वाक्य में 'प्रतिदिन' अपरिवर्तित रहता है। अतः यह अविकारी (अव्यय) पद है।

Step 4: Final Answer:

अतः, 'प्रतिदिन' एक विकारी पद नहीं है।

Quick Tip

यह जांचने के लिए कि कोई शब्द विकारी है या अविकारी, उसे अलग-अलग लिंग और वचन के कर्ताओं के साथ एक वाक्य में प्रयोग करके देखें। यदि शब्द का रूप बदल जाता है, तो वह विकारी है; यदि नहीं बदलता, तो वह अविकारी (अव्यय) है।

Section - B

21. निम्नलिखित में से किसी एक गद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

गद्यांश (क):

यह एक नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत है, जो अनन्तकाल से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इस सारे देश में बहता रहा है। यह हमारा सौभाग्य रहा है कि हमने ऐसे ही एक मूर्त रूप को अपने बीच चलते-फिरते, हँसते-रोते भी देखा है और जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया। वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है।

21(क)(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए गद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है, जिसमें पाठ का नाम और लेखक का नाम बताना होता है।

Step 2: Identifying the Author and Text:

गद्यांश में 'नैतिक और आध्यात्मिक स्रोत', 'सत्य और अहिंसा', और एक 'मूर्त रूप' (महात्मा गाँधी) का वर्णन है, जिसने देश में नए प्राण फूँक दिए। ये विचार भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

के निबंध 'भारतीय संस्कृति' से लिए गए हैं।

Step 3: Writing the Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य-खण्ड में संकलित तथा डॉ. राजेन्द्र प्रसाद द्वारा लिखित 'भारतीय संस्कृति' नामक पाठ से उद्धृत है। इस पाठ में लेखक ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय पाठ का नाम सिंगल इनवर्टेड कॉमा (' ') में और लेखक का नाम स्पष्ट रूप से लिखें। यदि आप पाठ के बारे में एक संक्षिप्त पंक्ति जोड़ते हैं, तो यह उत्तर को और प्रभावी बनाता है।

21(क)(ii). मानव मात्र के लिए वर्तमान में क्या आवश्यक हो गया है ?

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में पूछा गया है कि गद्यांश के अनुसार, आज पूरी मानवता के लिए क्या आवश्यक है।

Step 2: Analyzing the Passage:

गद्यांश की अंतिम पंक्ति में कहा गया है, "वह अमरत्व सत्य और अहिंसा का है।" लेखक आगे बताते हैं (जैसा कि मूल पाठ में है) कि यही सत्य और अहिंसा आज केवल भारत के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानव जाति के जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक हो गए हैं।

Step 3: Final Answer:

गद्यांश के अनुसार, मानव मात्र के लिए वर्तमान में सत्य और अहिंसा रूपी अमरत्व आवश्यक हो गया है। ये दो सिद्धांत ही मानवता को शांति और प्रगति के मार्ग पर ले जा सकते हैं।

Quick Tip

गद्यांश पर आधारित प्रश्नों का उत्तर देते समय, उत्तर को सीधे गद्यांश की पंक्तियों से प्राप्त करने का प्रयास करें। उत्तर संक्षिप्त और सटीक होना चाहिए।

21(क)(iii). गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : "जिसने अमरत्व की याद दिलाकर हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल हमारे मृत-प्राय शरीर में नये प्राण फूँके और मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया।"

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए रेखांकित अंश की व्याख्या करने के लिए कहा गया है। यह अंश लाक्षणिक भाषा में लिखा गया है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने महात्मा गाँधी के भारतीय समाज पर पड़े प्रभाव का अलंकारिक वर्णन किया है।

व्याख्या : लेखक कहते हैं कि हम भारतवासियों का यह सौभाग्य है कि हमने भारतीय संस्कृति के अमृत तत्त्व (सत्य और अहिंसा) को महात्मा गाँधी के रूप में साकार होते देखा है। गाँधीजी ने हमें हमारी अमर संस्कृति और उसकी शक्ति का स्मरण कराया।

- 'हमारी सूखी हड्डियों में नई मज्जा डाल': इसका आशय है कि परतंत्रता के कारण भारतवासी निराशा, हताश और शक्तिहीन हो चुके थे, जैसे बिना मज्जा के हड्डियाँ निर्जीव होती हैं। गाँधीजी ने उनमें नई शक्ति और ऊर्जा का संचार किया।

- 'हमारे मृतप्राय शरीर में नये प्राण फूँके': इसका अर्थ है कि गुलामी के कारण भारत राष्ट्र और समाज एक मृत शरीर के समान चेतना-शून्य हो गया था। गाँधीजी ने अपने विचारों और आंदोलनों से उस मृतप्राय राष्ट्र में नए जीवन का संचार कर दिया।

- 'मुरझाये हुए दिलों को फिर खिला दिया': इसका तात्पर्य है कि निराशा और दुःख से लोगों के मन मुरझा गए थे। गाँधीजी ने उनमें आशा, उत्साह और स्वतंत्रता की उमंग भरकर उन्हें फिर से प्रफुल्लित कर दिया।

Step 3: Conclusion:

अतः, इस अंश में लेखक ने बताया है कि महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलकर निराशा और कमजोर भारतीय जनमानस को नई शक्ति, चेतना और आशा से भर दिया।

Quick Tip

रेखांकित अंश की व्याख्या करते समय, लाक्षणिक और अलंकारिक भाषा के शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसके पीछे छिपे गहरे भाव को भी स्पष्ट करना चाहिए। प्रत्येक वाक्यांश का अलग-अलग अर्थ बताकर फिर समग्र भाव को समझाना एक अच्छी तकनीक है।

गद्यांश (ख):

ईर्ष्या से बचने का उपाय मानसिक अनुशासन है। जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए। उसे यह भी पता लगाना चाहिए कि जिस अभाव के कारण वह ईर्ष्यालु बन गया है, उसकी पूर्ति का रचनात्मक तरीका क्या है? जिस दिन उसके भीतर यह जिज्ञासा जगेगी, उसी दिन से वह ईर्ष्या करना कम कर देगा।

21(ख)(i). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए गद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है, जिसमें पाठ का नाम और लेखक का नाम बताना होता है।

Step 2: Identifying the Author and Text:

गद्यांश में 'ईर्ष्या', उससे बचने के उपाय के रूप में 'मानसिक अनुशासन' जैसे विषयों पर चर्चा की गई है। यह विषय और लेखन शैली राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के प्रसिद्ध निबंध 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' का है।

Step 3: Writing the Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के गद्य-खण्ड में संकलित तथा राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा लिखित निबंध 'ईर्ष्या, तू न गई मेरे मन से' से अवतरित है। इसमें लेखक ने ईर्ष्या जैसी नकारात्मक भावना के स्वरूप, कारणों और उससे बचने के उपायों पर मनोवैज्ञानिक ढंग से विचार किया है।

Quick Tip

लेखक का परिचय (जैसे- राष्ट्रकवि) लिखने से उत्तर अधिक प्रभावशाली होता है। सन्दर्भ में पाठ की मूल विधा (जैसे- निबंध) का उल्लेख करना भी अच्छा अभ्यास है।

21(ख)(ii). लेखक ईर्ष्या से बचने के लिए किस आदत को छोड़ने को कहता है ?

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में यह पूछा गया है कि गद्यांश के अनुसार, लेखक ईर्ष्यालु व्यक्ति को ईर्ष्या से बचने के लिए कौन सी आदत छोड़ने की सलाह देता है।

Step 2: Analyzing the Passage:

गद्यांश की दूसरी पंक्ति में स्पष्ट रूप से लिखा है, "...जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए।" यही लेखक का सीधा उपदेश है।

Step 3: Final Answer:

लेखक ईर्ष्या से बचने के लिए 'फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत' को छोड़ने को कहता है। इन फालतू बातों का अर्थ है दूसरों से अपनी तुलना करना, दूसरों की उन्नति देखकर जलना और उन बातों पर व्यर्थ में चिंता करना जो अपने नियंत्रण में नहीं हैं।

Quick Tip

गद्यांश आधारित प्रश्नों में अक्सर उत्तर सीधे गद्यांश में ही मिल जाता है। प्रश्न को ध्यान से पढ़ें और गद्यांश में संबंधित पंक्ति को खोजें।

21(ख)(iii). गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : "जो व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का है, उसे फालतू बातों के बारे में सोचने की आदत छोड़ देनी चाहिए।"

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए रेखांकित अंश की व्याख्या करने के लिए कहा गया है, जिसमें लेखक ने ईर्ष्या से बचने का एक उपाय बताया है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पंक्ति में लेखक रामधारी सिंह 'दिनकर' जी ईर्ष्या से बचने का एक व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक उपाय बताते हैं।

व्याख्या : लेखक का कहना है कि जिस व्यक्ति के स्वभाव में ईर्ष्या या जलन की भावना है, उसे अपने मन पर नियंत्रण करने का अभ्यास करना चाहिए। इसका सबसे पहला कदम यह है कि वह उन व्यर्थ की बातों के बारे में सोचना बंद कर दे जो ईर्ष्या को जन्म देती हैं।

'फालतू बातों' से लेखक का तात्पर्य दूसरों की संपत्ति, सफलता, सुख-सुविधाओं आदि पर ध्यान केंद्रित करने और लगातार अपनी स्थिति से उनकी तुलना करने से है। यह तुलना ही व्यक्ति के मन में अभाव और हीनता का भाव पैदा करती है, जो ईर्ष्या के रूप में प्रकट होती है। जब व्यक्ति अपने मन को इन व्यर्थ के विचारों में उलझने से रोकेगा, तभी वह अपनी ऊर्जा को सकारात्मक और रचनात्मक कार्यों में लगा पाएगा। यह आदत छोड़ना ही मानसिक अनुशासन की दिशा में पहला कदम है।

Step 3: Conclusion:

अतः, लेखक के अनुसार ईर्ष्या का मूल कारण व्यर्थ का चिंतन और दूसरों से तुलना है, इसलिए इस मानसिक आदत को त्याग देना ही ईर्ष्या से मुक्ति का प्रथम सोपान है।

Quick Tip

व्याख्या करते समय केवल पंक्ति का सरल अनुवाद न करें, बल्कि उसमें निहित गहरे अर्थ को स्पष्ट करें। 'फालतू बातों' जैसे शब्दों का आशय स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि परीक्षक को आपकी समझ का पता चल सके।

22. निम्नलिखित में से किसी एक पद्यांश पर आधारित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पद्यांश (क):

अबिगत गति कछु कहत न आवै ।
ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै ।
परम स्वाद सबही सु निरन्तर, अमित तोष उपजावै ।
मन-बानी कौ अगम-अगोचर, सो जानै जो पावै ।
रूप-रेख-गुन-जाति-जुगति-बिनु, निरालम्ब कित धावै ।
सब बिध अगम बिचारहिं तातै, सूर सगुन-पद गावै ॥

22(क)(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए पद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है, जिसमें कवि का नाम और पाठ का शीर्षक बताना होता है ।

Step 2: Identifying the Author and Text:

पद्यांश की अंतिम पंक्ति में 'सूर' शब्द का प्रयोग हुआ है, जो स्पष्ट रूप से कवि सूरदास की ओर संकेत करता है । यह पद उनकी प्रसिद्ध रचना 'सूरसागर' से लिया गया है और हमारी पाठ्य-पुस्तक में 'पद' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित है ।

Step 3: Writing the Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत पद्य भक्तिकाल की कृष्ण-भक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि सूरदास द्वारा रचित 'सूरसागर' नामक महाकाव्य से हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के काव्य-खण्ड में 'पद' शीर्षक के अन्तर्गत संगृहीत है । इस पद में सूरदास जी ने निराकार ब्रह्म की उपासना की कठिनाइयों को बताते हुए साकार ब्रह्म (श्रीकृष्ण) की भक्ति का समर्थन किया है ।

Quick Tip

सन्दर्भ लिखते समय कवि का नाम, उनकी प्रमुख रचना का नाम और पाठ्य-पुस्तक में संकलित शीर्षक का स्पष्ट उल्लेख करें । पद्य का केंद्रीय भाव एक पंक्ति में लिखने से उत्तर और भी प्रभावशाली हो जाता है ।

22(क)(ii). 'अगम-अगोचर' से क्या तात्पर्य है ?

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में 'अगम-अगोचर' शब्दों का अर्थ पूछा गया है ।

Step 2: Analyzing the Words:

यह शब्द निराकार ब्रह्म के लिए प्रयुक्त हुआ है।

- अगम : इसका अर्थ है 'जहाँ पहुँचा न जा सके' या 'जो पहुँच से परे हो'।

- अगोचर : इसका अर्थ है 'जो इन्द्रियों द्वारा अनुभव न किया जा सके' (अ + गोचर, 'गो' का एक अर्थ इन्द्री भी है)।

Step 3: Final Answer:

'अगम-अगोचर' से तात्पर्य है कि निराकार ब्रह्म मन और वाणी से पहुँचा नहीं जा सकता (अगम) और उसे इन्द्रियों द्वारा देखा या अनुभव भी नहीं किया जा सकता (अगोचर)। वह हमारी पहुँच और ज्ञान से परे है।

Quick Tip

जटिल शब्दों का अर्थ समझने के लिए उन्हें तोड़कर उनके मूल रूप को पहचानने का प्रयास करें।
जैसे अगम (अ + गम) और अगोचर (अ + गोचर)।

22(क)(iii). पद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंश : "ज्यों गूंगे मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै ।"

Solution:**Step 1: Understanding the Question:**

प्रश्न में दी गई रेखांकित पंक्ति की व्याख्या करने के लिए कहा गया है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पंक्ति में कवि सूरदास जी निराकार ब्रह्म की भक्ति से मिलने वाले आनंद की अनिर्वचनीयता (जिसे शब्दों में व्यक्त न किया जा सके) को एक दृष्टांत के माध्यम से समझा रहे हैं।

व्याख्या : सूरदास जी कहते हैं कि निराकार ब्रह्म की स्थिति का वर्णन करना अत्यंत कठिन है। उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। जिस प्रकार कोई गूंगा व्यक्ति मीठे फल के रस का स्वाद तो लेता है और उसे वह स्वाद अपने हृदय में (अंतरगत ही) बहुत अच्छा भी लगता है, परन्तु अपनी वाणी न होने के कारण वह उस आनंद को दूसरों के सामने व्यक्त नहीं कर सकता। वह केवल उस आनंद को स्वयं ही अनुभव कर सकता है। ठीक उसी प्रकार, जो भक्त निराकार ब्रह्म को प्राप्त कर लेता है, वह उसके आनंद को अनुभव तो करता है परन्तु उसे वाणी से बता नहीं सकता।

Step 3: Conclusion:

अतः, इस पंक्ति के माध्यम से कवि यह कहना चाहते हैं कि निराकार ब्रह्म की अनुभूति एक व्यक्तिगत और आंतरिक अनुभव है, जिसे शब्दों में पिरोना असंभव है।

Quick Tip

व्याख्या करते समय दृष्टांत (उदाहरण) और सिद्धांत (मूल बात) के बीच के संबंध को स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है। यहाँ गूँगे व्यक्ति का उदाहरण निराकार ब्रह्म के आनंद को न बता पाने के सिद्धांत को सिद्ध करने के लिए दिया गया है।

पद्यांश (ख):

चल अंचल में झर-झर झरते
पथ में जुगनू के स्वर्ण फूल,
दीपक से देता बार-बार
तेरा उज्ज्वल चितवन-विलास ।
रूपसि तेरा घन-केश-पाश !

22(ख)(i). उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए ।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में दिए गए पद्यांश का सन्दर्भ लिखने के लिए कहा गया है।

Step 2: Identifying the Author and Text:

प्रस्तुत पद्यांश की भाषा, शैली और प्रकृति का मानवीकरण छायावादी काव्य की विशेषता है। 'रूपसि तेरा घन-केश-पाश' जैसी पंक्तियाँ महादेवी वर्मा की काव्य-शैली से मेल खाती हैं। यह पद्यांश उनकी प्रसिद्ध कविता 'वर्षा-सुन्दरी के प्रति' से लिया गया है, जो उनके काव्य-संग्रह 'सांध्यगीत' में संकलित है।

Step 3: Writing the Context (सन्दर्भ):

प्रस्तुत पद्यांश छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्री एवं 'आधुनिक युग की मीरा' कही जाने वाली महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'सांध्यगीत' नामक काव्य-संग्रह से हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के काव्य-खण्ड में 'वर्षा-सुन्दरी के प्रति' शीर्षक से उद्धृत है। इसमें कवयित्री ने वर्षा का एक सुन्दरी के रूप में मानवीकरण करते हुए उसके मोहक रूप का चित्रण किया है।

Quick Tip

सन्दर्भ में कवि या कवयित्री को मिली उपाधि (जैसे - 'आधुनिक युग की मीरा') का उल्लेख करने से आपका उत्तर अधिक ज्ञानपूर्ण और प्रभावशाली लगता है।

22(ख)(ii). रेखांकित पद्यांश की व्याख्या कीजिए ।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

यहाँ पूरे पद्यांश की व्याख्या करने को कहा गया है, क्योंकि पूरा अंश ही रेखांकित है।

Step 2: Detailed Explanation:

प्रस्तुत पद्यांश में कवयित्री महादेवी वर्मा वर्षा ऋतु का एक सुन्दरी के रूप में मानवीकरण करते हुए उसके आगमन के सौंदर्य का वर्णन करती हैं।

व्याख्या : कवयित्री वर्षा रूपी सुन्दरी को संबोधित करते हुए कहती हैं, "हे रूपसि (सुन्दरी)! तुम्हारे चलते हुए आँचल (बादलों) से पानी की बूंदें झर-झर करके झर रही हैं। तुम्हारे आगमन के पथ पर चमकते हुए जुगनू ऐसे प्रतीत हो रहे हैं मानो वे सोने के फूल हों। आकाश में बार-बार चमकने वाली बिजली तुम्हारे उज्ज्वल दृष्टि-विलास (चंचल और चमकीली चितवन) के समान है, जो दीपक की तरह क्षण भर के लिए सब कुछ प्रकाशित कर देती है। अरे सुन्दरी! आकाश में छाए ये काले-काले घने बादल तुम्हारे सघन केश-समूह (बालों का जूड़ा) हैं।"

भावार्थ: कवयित्री ने वर्षा, बादल, बिजली और जुगनू के प्राकृतिक दृश्यों को एक नायिका की वेश-भूषा, चितवन और केशों के रूप में चित्रित कर प्रकृति को सजीव और मनमोहक बना दिया है।

Quick Tip

मानवीकरण पर आधारित कविताओं की व्याख्या करते समय, यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि किस प्राकृतिक उपादान को किस मानवीय अंग या क्रिया के रूप में दिखाया गया है (जैसे - बादल = आँचल/केश, बिजली = चितवन)।

22(ख)(iii). उपर्युक्त पद्यांश में प्रयुक्त रस और अलंकार का नाम लिखिए।

Solution:

Step 1: Understanding the Question:

प्रश्न में पद्यांश में प्रयुक्त रस और अलंकारों के नाम पूछे गए हैं।

Step 2: Identifying Rasa (रस):

पद्यांश में प्रकृति के सौंदर्य का वर्णन एक सुन्दरी के रूप में किया गया है, जो पाठक के मन में प्रेम और सौंदर्य का भाव जगाता है। अतः यहाँ शृंगार रस है।

Step 3: Identifying Alankars (अलंकार):

इस पद्यांश में कई अलंकारों का प्रयोग हुआ है :

- मानवीकरण अलंकार : पूरे पद्यांश में निर्जीव प्रकृति (वर्षा) पर मानवीय क्रियाओं और भावनाओं का आरोप किया गया है, अतः यह प्रमुख अलंकार है।

- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार : 'झर-झर' और 'बार-बार' शब्दों की आवृत्ति होने से यहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

- रूपक अलंकार : 'जुगनू के स्वर्ण फूल' में जुगनू पर स्वर्ण फूल का और 'घन-केश-पाश' में बादलों पर

केश-पाश का अभेद आरोप है, अतः यहाँ रूपक अलंकार है।

- उपमा अलंकार : 'दीपक से देता बार-बार' पंक्ति में चितवन-विलास की तुलना 'दीपक' से की गई है और 'से' वाचक शब्द का प्रयोग हुआ है, अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

Quick Tip

किसी पद्यांश में एक से अधिक अलंकार हो सकते हैं। उत्तर में प्रमुख अलंकारों का उल्लेख करें और यदि संभव हो तो उस पंक्ति को भी इंगित करें जहाँ वह अलंकार प्रयुक्त हुआ है।

23. दिए गए संस्कृत गद्यांश में से किसी एक का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

गद्यांश (क):

'विश्वस्य स्रष्टा ईश्वरः एक एव' इति भारतीयसंस्कृतेः मूलम् । विभिन्नमतावलम्बिनः विविधैः नामभिः एकम् एव ईश्वरं भजन्ते । अग्निः, इन्द्रः, कृष्णः, करीमः, रामः, रहीमः, जिनः, बुद्धः, ख्रिस्तः, अल्लाहः इत्यादीनि नामानि एकस्य एव परमात्मनः सन्ति । तम् एव ईश्वरं जनाः गुरुः इत्यपि मन्यन्ते । अतः सर्वेषां मतानां समभावः सम्मानश्च अस्माकं संस्कृतेः सन्देशः ।

23(क). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

Solution:

Step 1: सन्दर्भ (Context):

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'भारतीय संस्कृतिः' नामक पाठ से उद्धृत है। इस अंश में भारतीय संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता - ईश्वर की एकता - पर प्रकाश डाला गया है।

Step 2: हिन्दी में अनुवाद (Translation in Hindi):

'संसार का रचयिता ईश्वर एक ही है', यह भारतीय संस्कृति का मूल (आधार) है। विभिन्न मतों को मानने वाले लोग अनेक नामों से एक ही ईश्वर का भजन करते हैं। अग्नि, इन्द्र, कृष्ण, करीम, राम, रहीम, जिन, बुद्ध, ईसा (ख्रिस्त), अल्लाह इत्यादि नाम एक ही परमात्मा के हैं। उसी ईश्वर को लोग 'गुरु' के रूप में भी मानते हैं। अतः सभी मतों के प्रति समान भाव रखना और सम्मान करना, हमारी संस्कृति का सन्देश है।

Quick Tip

संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद करते समय विभक्ति और वचन का ध्यान रखें। शब्दों का शाब्दिक अर्थ करने के बाद उन्हें एक सहज और प्रवाहमयी हिन्दी वाक्य में ढालने का प्रयास करें।

गद्यांश (ख):

एकदा बहवः जनाः धूम्रयानम् आरुह्य नगरं प्रति गच्छन्ति स्म । तेषु केचित् ग्रामीणः केचिच्च नागरिकाः आसन् । मौनं स्थितेषु तेषु एकः नागरिकः ग्रामीणान् उपहसन् अकथयत् । “ग्रामीणाः अद्यापि पूर्ववत् अशिक्षिताः अज्ञाश्च सन्ति । न तेषां विकासः अभवत् न च भवितुं शक्नोति ।” तस्य तादृशं जल्पनं श्रुत्वा कोऽपि चतुरः ग्रामीणः अब्रवीत्, भद्र नागरिक ! भवान् एव किञ्चित् ब्रवीतु यतो हि भवान् शिक्षितः बहुज्ञः च अस्ति ।

23(ख). उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

Solution:

Step 1: सन्दर्भ (Context):

प्रस्तुत संस्कृत गद्यांश हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'प्रबुद्धो ग्रामीणः' (बुद्धिमान ग्रामीण) नामक पाठ से लिया गया है। इस पाठ में एक चतुर ग्रामीण की बुद्धिमत्ता को एक कहानी के माध्यम से दर्शाया गया है।

Step 2: हिन्दी में अनुवाद (Translation in Hindi):

एक बार बहुत से लोग रेलगाड़ी (धूम्रयानम्) पर चढ़कर नगर की ओर जा रहे थे। उनमें कुछ ग्रामीण और कुछ शहरी (नागरिक) थे। उनके चुपचाप बैठे होने पर, एक शहरी ने ग्रामीणों का उपहास करते हुए (मजाक उड़ाते हुए) कहा, "ग्रामीण आज भी पहले की तरह अशिक्षित और अज्ञानी हैं। न उनका विकास हुआ है और न ही हो सकता है।"

उसकी वैसी बकवास सुनकर किसी चतुर ग्रामीण ने कहा, "हे शिष्ट नागरिक! आप ही कुछ कहें, क्योंकि आप शिक्षित और बहुत जानने वाले (बहुज्ञ) हैं।"

Quick Tip

कहानी वाले गद्यांश का अनुवाद करते समय संवादों के भाव को समझना महत्वपूर्ण है। 'उपहसन्' (उपहास करते हुए), 'जल्पनं' (बकवास) जैसे शब्दों का सही अर्थ लिखने से अनुवाद सजीव हो जाता है।

24. दिए गए श्लोकों में से किसी एक श्लोक का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

24(क). श्लोक (क):

धान्यानाम् उत्तमं दाक्षयं धनानामुत्तमं श्रुतम् ।
लाभानां श्रेय आरोग्यं सुखानां तुष्टिरुत्तमा ॥

उपर्युक्त श्लोक का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

Solution:

Step 1: सन्दर्भ (Context):

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'जीवन सूत्रणि' (जीवन के सूत्र) नामक पाठ से उद्धृत है। इन श्लोकों में यक्ष और युधिष्ठिर के संवाद के माध्यम से जीवन के उपयोगी सूत्रों पर प्रकाश डाला गया है।

Step 2: हिन्दी में अनुवाद (Translation in Hindi):

(यक्ष के प्रश्न का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर कहते हैं -)

अन्नों में उत्तम (धान्यानाम् उत्तमं) चतुराई (दाक्षयं) है, धनों में उत्तम शास्त्र (श्रुतम्) है।
लाभों में श्रेष्ठ (लाभानां श्रेयः) निरोगी होना (आरोग्यं) है और सुखों में उत्तम (सुखानां उत्तमा) सन्तोष (तुष्टिः) है।

Quick Tip

श्लोकों का अनुवाद करते समय संधि-विच्छेद पर ध्यान दें, जैसे 'धनानामुत्तमं' = 'धनानाम् + उत्तमं'। इससे शब्दों का अर्थ स्पष्ट हो जाता है और अनुवाद में सरलता होती है।

24(ख). श्लोक (ख):

कोकिल ! यापय दिवसान् तावद् विरसान् करीलविटपेषु ।
यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति ।।

उपर्युक्त श्लोक का सन्दर्भ-सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए ।

Solution:**Step 1: सन्दर्भ (Context):**

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्य-पुस्तक 'हिन्दी' के 'संस्कृत-खण्ड' में संकलित 'अन्योक्तिविलासः' (अन्योक्तियों का सौन्दर्य) नामक पाठ से लिया गया है। इस श्लोक में कोयल के माध्यम से विद्वान व्यक्ति को धैर्य धारण करने की शिक्षा दी गई है।

Step 2: हिन्दी में अनुवाद (Translation in Hindi):

हे कोयल ! तब तक अपने नीरस दिनों को करील (एक कँटीला वृक्ष) के पेड़ों पर बिताओ, जब तक कि भौरों की पंक्तियों से युक्त (यावन्मिलदलिमालः) कोई आम का पेड़ (रसालः) सुशोभित (समुल्लसति) नहीं होता।

भावार्थ: इस अन्योक्ति का भाव यह है कि, "हे विद्वान पुरुष ! तब तक अपने बुरे दिनों को धैर्यपूर्वक व्यतीत करो, जब तक कि तुम्हारे अच्छे दिन नहीं आ जाते और कोई गुणवान व्यक्ति तुम्हें आश्रय नहीं प्रदान करता।"

Quick Tip

'अन्योक्ति' पर आधारित श्लोकों का अनुवाद करते समय, शाब्दिक अर्थ के साथ-साथ उसका प्रतीकात्मक अर्थ (भावार्थ) भी अवश्य लिखना चाहिए। यहाँ कोयल 'विद्वान' का और आम का पेड़ 'गुणी आश्रयदाता' का प्रतीक है।

25(क)(i). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के आधार पर महात्मा गाँधी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solution:

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के नायक महात्मा गाँधी हैं। कवि डॉ. राजेन्द्र मिश्र ने उन्हें एक अवतारी पुरुष के रूप में चित्रित किया है, जो भारत को परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए अवतरित हुए थे। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **दिव्य एवं अलौकिक पुरुष** : कवि ने गाँधीजी को ईश्वर का अवतार माना है। वे सामान्य मनुष्य होते हुए भी दिव्य गुणों से युक्त थे। उनका जन्म ही भारत के उद्धार के लिए हुआ था।
2. **हरिजनोद्धारक** : गाँधीजी समाज में व्याप्त छुआछूत और भेदभाव के घोर विरोधी थे। उन्होंने दलितों और शोषित वर्ग को 'हरिजन' (ईश्वर के जन) नाम दिया और उनके सामाजिक समानता के अधिकारों के लिए जीवन भर संघर्ष किया।
3. **सत्य और अहिंसा के प्रबल समर्थक** : सत्य और अहिंसा गाँधीजी के दो सबसे बड़े शस्त्र थे। उन्होंने इन्हीं सिद्धांतों के बल पर शक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्य को पराजित किया। उनके अनुसार, अहिंसा कायरों का नहीं, बल्कि वीरों का अस्त्र है।
4. **दृढ़-संकल्प** : गाँधीजी के चरित्र की एक प्रमुख विशेषता उनका दृढ़-निश्चयी होना है। वे जो भी संकल्प ले लेते थे, उसे पूरा करके ही रहते थे। भारत को स्वतंत्र कराने का उनका संकल्प इसी का प्रमाण है।
5. **मानवता के अग्रदूत** : गाँधीजी के विचार किसी एक जाति, धर्म या देश तक सीमित नहीं थे। वे सम्पूर्ण मानवता के पुजारी थे और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा विश्व-बंधुत्व की भावना में विश्वास रखते थे।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण लिखते समय, प्रत्येक विशेषता को एक शीर्षक (heading) के रूप में प्रस्तुत करें और उसके बाद उसका संक्षिप्त विवरण दें। इससे उत्तर अधिक व्यवस्थित और पठनीय लगता है।

25(क)(ii). 'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए।

Solution:

'मुक्तिदूत' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग में महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका के प्रवास और वहाँ भारतीयों की दुर्दशा का वर्णन किया गया है।

Step 1: Introduction to the Canto:

इस सर्ग का आरम्भ महात्मा गाँधी के दक्षिण अफ्रीका पहुँचने से होता है। वे वहाँ भारतीयों की दयनीय स्थिति देखकर अत्यंत व्यथित होते हैं।

Step 2: Detailed Plot:

दक्षिण अफ्रीका में गोरे शासक भारतीयों से घृणा करते थे और उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार करते थे। गाँधीजी ने इस अन्याय को अपनी आँखों से देखा। एक बार जब वे रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा कर रहे थे, तो एक गोरे अधिकारी ने उन्हें रंगभेद के कारण अपमानित किया और सामान सहित डिब्बे से बाहर फेंक दिया। इस अपमानजनक घटना ने गाँधीजी के हृदय को गहरा आघात पहुँचाया। उन्होंने यह दृढ़ निश्चय किया कि वे इस अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करेंगे और भारतीयों को उनके अधिकार दिलाएंगे।

Step 3: Conclusion of the Canto:

इसी सर्ग में गाँधीजी ने अंग्रेजों के अत्याचारों का विरोध करने के लिए 'सत्याग्रह' रूपी अस्त्र का पहली बार प्रयोग किया और अपने आंदोलन में सफलता प्राप्त की। यह सर्ग गाँधीजी के एक सामान्य व्यक्ति से एक महान नेता के रूप में परिवर्तन की शुरुआत को दर्शाता है।

Quick Tip

किसी सर्ग का सारांश लिखते समय, उस सर्ग की मुख्य घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिखें। घटना का कारण, घटना का वर्णन और उसका परिणाम—इन तीन बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करें।

25(ख)(i). 'कर्ण' खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली घटना का वर्णन कीजिए।

Solution:

'कर्ण' खण्डकाव्य की सबसे प्रभावशाली, मार्मिक और कर्ण के चरित्र को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने वाली घटना कर्ण द्वारा अपने जन्मजात कवच और कुण्डल का दान करना है।

Step 1: The Context:

महाभारत के युद्ध से पूर्व, देवराज इन्द्र को यह चिंता थी कि जब तक कर्ण के पास उसके जन्मजात कवच और कुण्डल हैं, तब तक कोई भी योद्धा, यहाँ तक कि अर्जुन भी, उसे पराजित नहीं कर सकता। अतः, अपने पुत्र अर्जुन की रक्षा के लिए इन्द्र एक ब्राह्मण का वेश धारण करके कर्ण के पास पहुँचे।

Step 2: The Event:

कर्ण अपनी दानवीरता के लिए प्रसिद्ध थे और सूर्योपासना के बाद वे किसी भी याचक को खाली हाथ नहीं लौटाते थे। सूर्यदेव ने स्वप्न में कर्ण को इन्द्र के छल के प्रति सचेत भी किया था, परन्तु कर्ण ने अपने दान के प्रण को तोड़ना स्वीकार नहीं किया। जब ब्राह्मण वेशधारी इन्द्र ने कर्ण से भिक्षा में उनके कवच और कुण्डल माँग लिए, तो कर्ण ने एक क्षण का भी विलम्ब नहीं किया। यह जानते हुए भी कि कवच और कुण्डल के बिना उनकी मृत्यु निश्चित है, उन्होंने अपने शरीर से जुड़े उस अभेद्य कवच और कुण्डलों को शस्त्र से काटकर इन्द्र को दान कर दिया।

Step 3: The Impact:

कर्ण का यह आत्म-बलिदान और त्याग देखकर स्वयं देवराज इन्द्र भी चकित और लज्जित हो गए। यह घटना कर्ण को 'दानवीर' के रूप में प्रतिष्ठित करती है और पाठक के हृदय पर एक अमिट छाप छोड़ती है। यह उनके चरित्र की महानता का सबसे बड़ा प्रमाण है।

Quick Tip

किसी प्रभावशाली घटना का वर्णन करते समय, घटना की पृष्ठभूमि, मुख्य घटनाक्रम और उसके प्रभाव या परिणाम को स्पष्ट रूप से लिखें। इससे उत्तर की गहराई बढ़ जाती है।

25(ख)(ii). 'कर्ण' खण्डकाव्य के आधार पर कुन्ती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solution:

'कर्ण' खण्डकाव्य में कुन्ती का चरित्र एक विवश, ममतामयी, चिंतित और पश्चाताप की अग्नि में जलती हुई माँ के रूप में उभरकर सामने आता है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **ममतामयी माँ :** कुन्ती अपने सभी पुत्रों (पांडवों और कर्ण) से असीम स्नेह करती हैं। उनका हृदय कर्ण के लिए भी ममता से भरा हुआ है, जिसे उन्होंने समाज के भय से त्याग दिया था। वे कर्ण को युद्ध में पांडवों के विरुद्ध लड़ते नहीं देखना चाहतीं और इसी ममता के वशीभूत होकर वे कर्ण से मिलने जाती हैं।
2. **विवश एवं भाग्यहीना :** कुन्ती का जीवन विडम्बनाओं और विवशताओं से भरा है। कौमार्यावस्था में मिले पुत्र को लोक-लाज के भय से उन्हें नदी में बहाना पड़ा। यह रहस्य वे जीवन भर अपने हृदय में छिपाए रहीं। यह विवशता उनके चरित्र की सबसे बड़ी त्रासदी है।
3. **पश्चाताप की अग्नि में दग्ध :** कुन्ती अपने कृत्य पर जीवन भर पश्चाताप करती हैं। वे इस बात से दुःखी हैं कि वे कर्ण को उसका अधिकार और पहचान नहीं दे सकीं। जब वे कर्ण के पास जाती हैं, तो उनका हृदय अपराध-बोध और पश्चाताप से भरा होता है।
4. **चिंताग्रस्त :** कुन्ती महाभारत के आसन्न युद्ध के विनाशकारी परिणाम को लेकर अत्यंत चिंतित हैं। वे जानती हैं कि इस युद्ध में उनके ही पुत्र एक-दूसरे के रक्त के प्यासे होंगे। कर्ण और अर्जुन के बीच होने वाले संघर्ष की कल्पना मात्र से ही वे सिहर उठती हैं।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण करते समय पात्र के अंतर्द्वंद्व और उसकी परिस्थितियों का उल्लेख अवश्य करें, जैसे कुन्ती की लोक-लाज और पुत्र-प्रेम के बीच की विवशता। यह आपके उत्तर को अधिक संवेदनशील और सटीक बनाता है।

25(ग)(i). 'तुमुल' खण्डकाव्य के आधार पर 'मेघनाद' की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

Solution:

'तुमुल' खण्डकाव्य में मेघनाद (इन्द्रजीत) का चरित्र एक वीर, पराक्रमी, तेजस्वी और पितृभक्त योद्धा के रूप में चित्रित किया गया है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **अतुलनीय वीर एवं पराक्रमी :** मेघनाद लंका का सबसे वीर और शक्तिशाली योद्धा है। उसने अपने पराक्रम से देवराज इन्द्र को भी पराजित कर बन्दी बना लिया था, जिस कारण उसका नाम 'इन्द्र-जीत' पड़ा। वह युद्ध-कला में अत्यंत निपुण है और उसके रण-कौशल से शत्रु सेना भयभीत रहती है।
2. **महान पितृभक्त :** मेघनाद अपने पिता रावण का बहुत आदर करता है और उनकी आज्ञा को सर्वोपरि मानता है। वह अपने पिता के सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को भी सदैव तत्पर रहता है।
3. **कर्तव्यनिष्ठ एवं राष्ट्रभक्त :** वह एक कर्तव्यनिष्ठ पुत्र और सच्चा राष्ट्रभक्त है। जब लंका पर संकट आता है, तो वह अपने व्यक्तिगत सुखों और पत्नी के प्रेम को त्यागकर राष्ट्र-रक्षा के कर्तव्य को प्राथमिकता देता है।
4. **मायावी शक्तियों का ज्ञाता :** मेघनाद तंत्र-मंत्र और मायावी युद्ध-कला का ज्ञाता है। वह अदृश्य होकर युद्ध करने में माहिर है। अपनी इन्हीं शक्तियों का प्रयोग करके वह युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति-बाण से मूर्च्छित कर देता है।
5. **अहंकारी :** अपने बल और पराक्रम पर उसे अत्यधिक गर्व है, जो उसके चरित्र में अहंकार का भाव लाता है। वह राम और लक्ष्मण को साधारण मनुष्य समझकर उनकी शक्ति को कम आँकता है।

Quick Tip

किसी पात्र का चरित्र-चित्रण करते समय केवल सकारात्मक गुणों का ही नहीं, बल्कि उसके नकारात्मक पहलुओं (जैसे- मेघनाद का अहंकार) का भी उल्लेख करें। इससे चरित्र-चित्रण संतुलित और यथार्थवादी लगता है।

25(ग)(ii). 'तुमुल' खण्डकाव्य के 'युद्धासन्न सौमित्र' सर्ग का कथानक लिखिए ।

Solution:

'तुमुल' खण्डकाव्य के 'युद्धासन्न सौमित्र' सर्ग में लक्ष्मण के चरित्र के वीर पक्ष, उनके अंतर्मन के भावों और युद्ध के लिए उनकी तैयारी का ओजस्वी वर्णन किया गया है। 'युद्धासन्न सौमित्र' का अर्थ है 'युद्ध के लिए तैयार लक्ष्मण'।

Step 1: The Context:

यह सर्ग उस समय का है जब राम-रावण युद्ध चल रहा है और लंका के बड़े-बड़े वीर मारे जा चुके हैं। अब रावण अपने सबसे वीर पुत्र मेघनाद को युद्ध के लिए भेजता है। मेघनाद के युद्ध में आने के समाचार से

राम की सेना में हलचल मच जाती है।

Step 2: Lakshman's Reaction and Resolve:

जब लक्ष्मण को मेघनाद के युद्ध में आने का समाचार मिलता है, तो वे क्रोध और वीरता से भर उठते हैं। वे मेघनाद के अहंकार को चूर-चूर करने का संकल्प लेते हैं। इस सर्ग में लक्ष्मण के शौर्य, पराक्रम और श्रीराम के प्रति उनकी अनन्य भक्ति का चित्रण किया गया है। वे श्रीराम से मेघनाद से युद्ध करने की आज्ञा माँगते हैं।

Step 3: The Canto's Essence:

इस सर्ग में लक्ष्मण के मन में उठ रहे विचारों को दर्शाया गया है। वे सोचते हैं कि मेघनाद ने छल से युद्ध किया है और देवताओं को भी कष्ट दिया है। वे धर्म की स्थापना और अधर्म के नाश के लिए युद्ध करने को आतुर हैं। श्रीराम उन्हें समझाते हैं और उन्हें युद्ध के लिए विदा करते हैं। यह सर्ग लक्ष्मण के वीर, तेजस्वी और कर्तव्यनिष्ठ रूप को प्रमुखता से उजागर करता है और आने वाले भयंकर युद्ध की भूमिका तैयार करता है।

Quick Tip

किसी सर्ग का कथानक लिखते समय, उस सर्ग के शीर्षक के अर्थ को अपने उत्तर में स्पष्ट करें। जैसे 'युद्धासन्न सौमित्र' का अर्थ समझाने से परीक्षक पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

25(घ)(i). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के तृतीय सर्ग 'कौशल्या-सुमित्रा-मिलन' की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

Solution:

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य का तृतीय सर्ग 'कौशल्या-सुमित्रा-मिलन' एक अत्यंत मार्मिक और भावपूर्ण सर्ग है। इसमें भरत के ननिहाल से अयोध्या लौटने पर उनकी अपनी माताओं से भेंट का हृदयस्पर्शी वर्णन है।

Step 1: Bharat's Return:

जब भरत अपने ननिहाल से अयोध्या लौटते हैं, तो वे नगर की उदासी और अपने पिता दशरथ के निधन का समाचार सुनकर टूट जाते हैं। उन्हें जब यह पता चलता है कि उनकी माता कैकेयी ने ही राम को वनवास और उनके लिए राज्य माँगा है, तो वे ग्लानि और क्रोध से भर उठते हैं।

Step 2: Meeting with Kaushalya:

भरत सबसे पहले श्री राम की माता कौशल्या के पास जाते हैं। कौशल्या पुत्र-वियोग में व्याकुल हैं। भरत को देखते ही वे उन्हें कटु वचन कहती हैं, "अब तुम सुखी होकर राज्य करो।" भरत उनके चरणों में गिरकर अपनी निरपराधता सिद्ध करते हैं और विलाप करते हैं। वे कहते हैं कि इस कुकृत्य में यदि उनकी तनिक भी सहमति हो तो उन्हें घोर पाप लगे। भरत की सरलता और राम-भक्ति देखकर कौशल्या का क्रोध शांत हो जाता है और वे उन्हें गले लगा लेती हैं।

Step 3: Meeting with Sumitra:

इसके पश्चात् भरत माता सुमित्रा से मिलते हैं। सुमित्रा एक वीर क्षत्राणी और ज्ञानवान नारी हैं। वे

भरत को धैर्य बँधाती हैं और उन्हें राजधर्म का पालन करने की प्रेरणा देती हैं। वे लक्ष्मण के वन जाने को उनका सौभाग्य बताती हैं। सुमित्रा के ज्ञानपूर्ण वचनों से भरत को सात्वना मिलती है। यह सर्ग माताओं के वात्सल्य और भरत के निर्दोष चरित्र को उजागर करता है।

Quick Tip

भावपूर्ण प्रसंगों का वर्णन करते समय, पात्रों के मनोभावों (जैसे - कौशल्या का क्रोध, भरत की ग्लानि, सुमित्रा का धैर्य) का विशेष रूप से उल्लेख करें। इससे उत्तर में सजीवता आती है।

25(घ)(ii). 'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solution:

'कर्मवीर भरत' खण्डकाव्य के नायक भरत हैं। कवि ने भरत को एक महान कर्मयोगी, आदर्श भाई और त्यागी पुरुष के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **महान त्यागी और निर्लोभी :** भरत के चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष उनका त्याग है। जब उन्हें अपनी माता कैकेयी द्वारा माँगा गया अयोध्या का राज्य मिलता है, तो वे उसे काँटों के समान त्याग देते हैं। उनके लिए राज-सुख से बढ़कर भाई का प्रेम और पिता के वचन का मान है।
2. **आदर्श भ्राता :** भरत का अपने बड़े भाई श्री राम के प्रति प्रेम और श्रद्धा अनुकरणीय है। वे स्वयं को राम का सेवक मानते हैं। वे राम को वन से लौटाने के लिए चित्रकूट तक जाते हैं और उनके न लौटने पर उनकी खड़ाऊँ को सिंहासन पर रखकर एक सेवक की भाँति चौदह वर्षों तक राज्य का संचालन करते हैं।
3. **आत्मग्लानि से युक्त :** जब भरत को अपनी माता के कुकृत्य का पता चलता है, तो वे आत्मग्लानि से भर उठते हैं। वे स्वयं को इस सारे अनर्थ का कारण मानते हैं। उनका यह पश्चाताप उनके निर्मल और संवेदनशील हृदय का परिचायक है।
4. **कर्मयोगी :** भरत केवल भावुक ही नहीं, बल्कि एक सच्चे कर्मयोगी भी हैं। वे राम की अनुपस्थिति में एक तपस्वी की भाँति जीवन जीते हुए राज-काज की सारी जिम्मेदारियों को कुशलतापूर्वक निभाते हैं। वे कर्तव्य-पालन को ही अपनी पूजा समझते हैं।

Quick Tip

नायक का चरित्र-चित्रण करते समय, खण्डकाव्य के शीर्षक के साथ उसके चरित्र को जोड़ें। जैसे, भरत अपने कर्मों के कारण ही 'कर्मवीर' कहलाए। यह आपके उत्तर को शीर्षक के प्रति प्रासंगिक बनाता है।

25(ङ)(i). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के आधार पर जवाहर लाल नेहरू की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

Solution:

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य के नायक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू हैं। कवि देवी प्रसाद शुक्ल 'राही' ने उन्हें भारतीय जनता के नायक और युग-पुरुष के रूप में चित्रित किया है। उनकी चरित्रक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **लोकनायक एवं भारत के भाग्यविधाता :** नेहरू जी सम्पूर्ण भारत के प्रिय नेता हैं। कवि ने उन्हें 'ज्योति जवाहर' की संज्ञा दी है, जिसका प्रकाश पूरे भारत में फैला है। वे भारत के नव-निर्माण के सूत्रधार और भाग्यविधाता हैं।
2. **समन्वयवादी दृष्टिकोण :** नेहरू जी के व्यक्तित्व में विभिन्न संस्कृतियों और विचारों का अद्भुत समन्वय है। वे पूर्व और पश्चिम, प्राचीन और नवीन, सभी के अच्छे गुणों को आत्मसात करने के पक्षधर हैं।
3. **प्रकृति-प्रेमी :** नेहरू जी को प्रकृति से अगाध प्रेम था। खण्डकाव्य में उन्हें गंगा, हिमालय और भारत की प्राकृतिक सुंदरता से प्रेरणा लेते हुए दिखाया गया है।
4. **विश्व-शांति के अग्रदूत :** नेहरू जी केवल भारत के ही नहीं, बल्कि विश्व के नेता थे। वे 'पंचशील' के सिद्धांतों के माध्यम से विश्व में शांति और सह-अस्तित्व की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहे।
5. **अहिंसा और त्याग के समर्थक :** वे महात्मा गाँधी के सच्चे अनुयायी थे और सत्य, अहिंसा, प्रेम और त्याग जैसे मानवीय मूल्यों में उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने जीवन के अनेक वर्ष जेल में बिताए।

Quick Tip

'ज्योति जवाहर' जैसे खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण करते समय, कवि द्वारा दी गई उपमाओं और प्रतीकों (जैसे - जवाहर का ज्योति-पुंज होना) का उल्लेख अवश्य करें।

25(ड)(ii). 'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

Solution:

'ज्योति जवाहर' खण्डकाव्य की कथावस्तु भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के विराट व्यक्तित्व पर केन्द्रित है। इसमें किसी कथानक या कहानी के स्थान पर नायक के चरित्र, विचारों और उनके कार्यों को काव्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है।

Step 1: The Central Theme:

इस खण्डकाव्य का कोई परम्परागत कथानक नहीं है। इसका आरम्भ उस समय से होता है जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। इस राष्ट्रीय संकट के समय, कवि नेहरू जी के विराट व्यक्तित्व में सम्पूर्ण भारत का प्रतिबिम्ब देखता है और उनके माध्यम से भारत की एकता और शक्ति का आह्वान करता है।

Step 2: Symbolic Representation:

कवि कल्पना करता है कि भारत के विभिन्न राज्य अपने प्रतिनिधि भेजकर अपने राजा और नायक जवाहरलाल से अपने-अपने प्रदेश की विशेषताओं और समस्याओं का वर्णन कर रहे हैं। कवि ने नेहरू जी को एक ऐसे सूर्य के रूप में चित्रित किया है जिसके चारों ओर भारत के सभी प्रांत ग्रहों की भाँति

परिक्रमा करते हैं।

Step 3: Portrayal of Nehru's Personality:

कथावस्तु का विकास नेहरू जी के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के माध्यम से होता है। इसमें उनके लोकनायक रूप, समन्वयवादी दृष्टिकोण, प्रकृति-प्रेम, विश्व-शांति के प्रयासों और गाँधीजी के प्रति उनकी श्रद्धा को दर्शाया गया है। कवि यह संदेश देता है कि जब तक नेहरू जैसा नायक भारत का नेतृत्व कर रहा है, तब तक देश पर कोई संकट नहीं आ सकता।

Step 4: Conclusion:

अतः, इस खण्डकाव्य की कथावस्तु नेहरू जी के प्रेरणादायी चरित्र का गुणगान है, जो राष्ट्रीय एकता और अखंडता का प्रतीक है।

Quick Tip

जब किसी खण्डकाव्य में परम्परागत कथा न हो, तो उसकी कथावस्तु लिखते समय उसके प्रतीकात्मक और विचारात्मक पक्ष पर अधिक ध्यान दें। स्पष्ट करें कि कवि किस उद्देश्य से पात्रों और घटनाओं का वर्णन कर रहा है।

25(च)(i). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solution:

'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के नायक श्रीकृष्ण हैं। यद्यपि युधिष्ठिर भी एक प्रमुख पात्र हैं, किन्तु काव्य का केन्द्रीय चरित्र श्रीकृष्ण ही हैं, जिनके निर्देशन में सम्पूर्ण कथानक आगे बढ़ता है। श्रीकृष्ण की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **लोक-कल्याणकारी और धर्म-संस्थापक :** श्रीकृष्ण का सम्पूर्ण जीवन लोक-कल्याण के लिए समर्पित है। वे धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिए ही कार्य करते हैं। वे पाण्डवों का पक्ष इसलिए लेते हैं क्योंकि वे धर्म के मार्ग पर हैं।
2. **महान कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ:** श्रीकृष्ण एक कुशल राजनीतिज्ञ हैं। वे जानते हैं कि कब, कहाँ और कैसे कार्य करना है। जरासंध और शिशुपाल जैसे अधर्मी राजाओं का वध वे अपने बल से नहीं, बल्कि कूटनीति से करवाते हैं।
3. **शक्ति, शील और सौन्दर्य के प्रतीक :** श्रीकृष्ण में शक्ति, शील (चरित्र) और सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय है। वे दुष्टों के लिए वज्र के समान कठोर हैं, तो अपने भक्तों के लिए पुष्प से भी कोमल हैं। उनका सौन्दर्य और व्यक्तित्व सभी को आकर्षित करता है।
4. **अन्याय के विरोधी :** श्रीकृष्ण अन्याय और अत्याचार के प्रबल विरोधी हैं। वे शिशुपाल द्वारा सभा में किए गए अपने अपमान को तब तक सहन करते हैं, जब तक कि उनके सौ अपराध पूरे नहीं हो जाते, परन्तु उसके बाद वे तत्काल उसका वध कर देते हैं।

5. **निर्लिप्त कर्मयोगी :** श्रीकृष्ण सभी कार्य करते हुए भी उनके फल से निर्लिप्त रहते हैं। वे राजसूय यज्ञ की सफलता का श्रेय युधिष्ठिर को देते हैं और स्वयं ब्राह्मणों के चरण धोने जैसा सेवा-कार्य करते हैं। यह उनकी महानता और निरहंकारिता का परिचायक है।

Quick Tip

'अग्रपूजा' में दो प्रमुख पात्र हैं- युधिष्ठिर और श्रीकृष्ण। प्रश्न में 'नायक' पूछा गया है। आप श्रीकृष्ण को नायक बताते हुए उत्तर लिखें, क्योंकि वे ही काव्य की केन्द्रीय शक्ति और प्रेरक हैं।

25(च)(ii). 'अग्रपूजा' खण्डकाव्य के 'आयोजन' सर्ग की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

Solution:

'अग्रपूजा' खण्डकाव्य का 'आयोजन' सर्ग प्रथम सर्ग है। इसमें पाण्डवों द्वारा राजसूय यज्ञ के आयोजन और उसके समक्ष आने वाली बाधाओं पर विचार-विमर्श का वर्णन है।

Step 1: The Decision of Rajasuya Yajna:

खाण्डव वन को जलाकर उसके स्थान पर इन्द्रप्रस्थ नामक भव्य नगरी बसाने के पश्चात्, पाण्डव सु-खपूर्वक राज्य करते हैं। एक दिन नारद मुनि उनके पास आते हैं और युधिष्ठिर को 'राजसूय यज्ञ' करने का परामर्श देते हैं। युधिष्ठिर अपने भाइयों और श्रीकृष्ण से इस विषय पर मंत्रणा करते हैं।

Step 2: The Obstacle - Jarasandha:

श्रीकृष्ण युधिष्ठिर को बताते हैं कि राजसूय यज्ञ वही सम्राट कर सकता है जो सम्पूर्ण आर्यावर्त के राजाओं में श्रेष्ठ हो। वे बताते हैं कि मगध का सम्राट जरासंध इस यज्ञ में सबसे बड़ी बाधा है, क्योंकि उसने अनेक राजाओं को बन्दी बना रखा है। जब तक जरासंध जीवित है, तब तक युधिष्ठिर चक्रवर्ती सम्राट नहीं बन सकते और न ही यह यज्ञ सफल हो सकता है।

Step 3: The Plan:

श्रीकृष्ण जरासंध के वध की योजना प्रस्तुत करते हैं। वे बताते हैं कि जरासंध को सीधे युद्ध में पराजित करना लगभग असम्भव है। अतः, वे भीम के साथ मल्ल-युद्ध (कुश्ती) में उसे मारने का सुझाव देते हैं। इस योजना के अनुसार, श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन ब्राह्मण का वेश धारण करके मगध की राजधानी के लिए प्रस्थान करते हैं। यह सर्ग राजसूय यज्ञ के आयोजन की भूमिका तैयार करता है और श्रीकृष्ण की दूरदर्शिता तथा राजनीतिक कुशलता को प्रकट करता है।

Quick Tip

किसी सर्ग की कथावस्तु लिखते समय, यह स्पष्ट करें कि उस सर्ग की घटनाएँ मुख्य कथानक को किस प्रकार आगे बढ़ाती हैं। 'आयोजन' सर्ग राजसूय यज्ञ और जरासंध-वध की भूमिका तैयार करता है।

25(छ)(i). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के आधार पर सुभाषचन्द्र बोस की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

Solution:

'जय सुभाष' खण्डकाव्य के नायक नेताजी सुभाषचन्द्र बोस हैं। कवि विनोदचन्द्र पाण्डेय 'विनोद' ने उन्हें एक महान स्वतंत्रता सेनानी, वीर और युग-प्रवर्तक के रूप में चित्रित किया है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **महान देशभक्त और स्वतंत्रता-प्रेमी :** सुभाषचन्द्र बोस के जीवन का एकमात्र उद्देश्य भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराना था। वे एक महान देशभक्त थे और मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार थे। उन्होंने कहा था, "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।"
2. **वीर, साहसी और दृढ़-निश्चयी :** नेताजी अद्भुत वीर और साहसी थे। वे अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंककर उनके पहरों से निकल भागे। उन्होंने कठिन यात्राएँ करके जर्मनी और जापान पहुँचकर 'आजाद हिन्द फौज' का गठन किया।
3. **कुशल संगठनकर्ता और महान नेता :** उनमें नेतृत्व की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने विदेश में बिखरे हुए भारतीयों को संगठित करके एक शक्तिशाली सेना का निर्माण किया। उनके एक आह्वान पर सैनिक अपने प्राणों की बाजी लगाने को तैयार रहते थे।
4. **त्यागी और तपस्वी :** उन्होंने देश की स्वतंत्रता के लिए आई.सी.एस. जैसी प्रतिष्ठित नौकरी और समस्त पारिवारिक सुखों को त्याग दिया। उनका जीवन एक तपस्वी के समान था, जिसकी एकमात्र साधना भारत की मुक्ति थी।
5. **युग-प्रवर्तक :** वे एक महान क्रांतिकारी और युग-प्रवर्तक थे। उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र क्रांति का मार्ग अपनाया और देश के युवाओं में एक नई चेतना का संचार किया।

Quick Tip

नायक के चरित्र-चित्रण में उनके प्रसिद्ध नारों या कथनों का उल्लेख करने से उत्तर बहुत प्रभावशाली हो जाता है, जैसे सुभाषचन्द्र बोस का नारा "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा"।

25(छ)(ii). 'जय सुभाष' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए ।

Solution:

'जय सुभाष' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के भारत से गुप्त रूप से निकल भागने की साहसिक और रोमांचकारी घटना का वर्णन है।

Step 1: The House Arrest:

अंग्रेजी सरकार ने सुभाषचन्द्र बोस को उनके कलकत्ता स्थित घर में ही नजरबन्द कर दिया था। घर के चारों ओर कड़ा पहरा था ताकि वे किसी भी राजनीतिक गतिविधि में भाग न ले सकें। परन्तु सुभाष बाबू देश को आजाद कराने के लिए कृतसंकल्प थे।

Step 2: The Escape Plan:

उन्होंने नजरबन्दी से भागने की एक साहसिक योजना बनाई। उन्होंने अपनी दाढ़ी बढ़ा ली और एक पठान मौलवी का वेश धारण कर लिया। रात के अँधेरे में, जब सारा संसार सो रहा था, वे अंग्रेजों की आँखों में धूल झोंककर अपने घर से निकल पड़े।

Step 3: The Journey:

घर से निकलकर वे एक कार द्वारा गोमो स्टेशन पहुँचे। वहाँ से पेशावर जाने वाली ट्रेन पकड़कर वे भारत की सीमा से बाहर निकल गए। यह यात्रा अत्यंत जोखिम भरी थी, परन्तु देश-सेवा का दृढ़ संकल्प उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रहा था। यह सर्ग सुभाषचन्द्र बोस के अदम्य साहस, उनकी बुद्धि-कुशलता और मातृभूमि के प्रति उनके गहरे प्रेम को दर्शाता है। यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय है।

Quick Tip

रोमांचकारी घटनाओं का वर्णन करते समय, कथा को सजीव और रोचक ढंग से प्रस्तुत करें। महत्वपूर्ण विवरणों (जैसे- पठान का वेश, रात का समय) को अवश्य शामिल करें।

25(ज)(i). 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के द्वितीय सर्ग की कथावस्तु लिखिए।

Solution:

'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य का द्वितीय सर्ग 'संकल्प' है। इस सर्ग में नायक चन्द्रशेखर आजाद के विद्यार्थी जीवन और उनके मन में स्वतंत्रता की भावना के उदय का वर्णन है।

Step 1: Azad's Student Life:

चन्द्रशेखर वाराणसी के एक संस्कृत पाठशाला में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। वे एक मेधावी और स्वाभि-मानी छात्र थे। उसी समय देश में महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चल रहा था। देश भर में हड़तालें और जुलूस हो रहे थे।

Step 2: The Call of the Nation:

इस आन्दोलन की लहर ने किशोर चन्द्रशेखर के हृदय को भी झकझोर दिया। उनके मन में भी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की प्रबल इच्छा जाग्रत हुई। वे अपनी पढ़ाई छोड़कर असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े।

Step 3: The 'Sankalp' (Resolve):

आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। जब मजिस्ट्रेट ने उनसे उनका नाम, पिता का नाम और घर का पता पूछा, तो उन्होंने निर्भय होकर उत्तर दिया :

- नाम : आजाद
- पिता का नाम : स्वाधीन
- घर : जेलखाना

इस उत्तर से क्रोधित होकर मजिस्ट्रेट ने उन्हें पंद्रह बेंतों की सजा सुनाई। हर बेंत की मार पर वे 'भारत माता की जय' का नारा लगाते रहे। इसी घटना के बाद से वे 'आजाद' के नाम से प्रसिद्ध हुए और उन्होंने संकल्प लिया कि वे जीवन भर आजाद रहेंगे और मातृभूमि के लिए अपने प्राणों की आहुति दे देंगे।

Quick Tip

किसी सर्ग का कथानक लिखते समय यदि सर्ग का कोई शीर्षक (जैसे 'संकल्प') दिया गया हो, तो कथानक को उस शीर्षक के इर्द-गिर्द केंद्रित करें और स्पष्ट करें कि घटनाएँ उस शीर्षक को कैसे सार्थक करती हैं।

25(ज)(ii). 'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के आधार पर 'चन्द्रशेखर आजाद' का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Solution:

'मातृ-भूमि के लिए' खण्डकाव्य के नायक अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद हैं। उनका चरित्र वीरता, देशभक्ति, त्याग और अदम्य साहस का प्रतीक है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **महान देशभक्त और स्वतंत्रता-प्रेमी :** आजाद के जीवन का एकमात्र लक्ष्य मातृभूमि की स्वतंत्रता थी। वे बचपन से ही देश को आजाद कराने का स्वप्न देखते थे और इसी के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।
2. **वीर और साहसी :** आजाद अद्भुत वीर और साहसी थे। वे अंग्रेजों के शासन को एक खुली चुनौती देते थे। काकोरी कांड हो या सॉण्डर्स की हत्या, उन्होंने हर कार्य में अपनी वीरता का परिचय दिया। वे जीते-जी अंग्रेजों के हाथ न आने की अपनी प्रतिज्ञा पर अडिग रहे।
3. **कुशल संगठनकर्ता और नेता :** वे एक कुशल संगठनकर्ता थे। उन्होंने बिखरे हुए क्रांतिकारियों को एकत्र कर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' का गठन किया। भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारी उनका बहुत सम्मान करते थे।
4. **दृढ़-प्रतिज्ञा और स्वाभिमानी :** उन्होंने संकल्प लिया था कि वे कभी भी अंग्रेजों द्वारा जीवित नहीं पकड़े जाएंगे। इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में जब वे अंग्रेजों से घिर गए, तो उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा को निभाने के लिए अपनी ही पिस्तौल से स्वयं को गोली मार ली, परन्तु अंग्रेजों के हाथ नहीं आए।
5. **त्याग की प्रतिमूर्ति:** उन्होंने देश के लिए अपने परिवार, सुख और जीवन का त्याग कर दिया। उनका बलिदान भारतीय युवाओं के लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहेगा।

Quick Tip

चरित्र-चित्रण में उन घटनाओं का विशेष रूप से उल्लेख करें जो पात्र के चरित्र को परिभाषित करती हैं, जैसे चन्द्रशेखर आजाद द्वारा अपना नाम 'आजाद' बताना और अल्फ्रेड पार्क में उनका बलिदान।

25(झ)(i). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के आधार पर राणा प्रताप का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

Solution:

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के नायक और मेवाड़ के गौरव महाराणा प्रताप हैं। उनका चरित्र वीरता, देशभक्ति, त्याग, दृढ़-प्रतिज्ञा और स्वाभिमान का प्रतीक है। उनकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1. **अद्वितीय देशभक्त और स्वतंत्रता-प्रेमी :** महाराणा प्रताप अपनी मातृभूमि मेवाड़ से असीम प्रेम करते हैं। वे मेवाड़ की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार हैं। वे कहते हैं, "जब तक शरीर में प्राण हैं, मैं मेवाड़ को स्वतंत्र कराने का प्रयास करता रहूँगा।"
2. **वीर और साहसी योद्धा :** प्रताप एक अतुलनीय वीर और साहसी योद्धा हैं। वे हल्दीघाटी के युद्ध में अपनी सीमित सेना के साथ विशाल मुगल सेना का डटकर सामना करते हैं और अपनी वीरता का अद्भुत परिचय देते हैं।
3. **दृढ़-प्रतिज्ञा और स्वाभिमान :** उन्होंने मुगल सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार न करने की कठोर प्रतिज्ञा की थी। जीवन भर अनेक कष्ट सहने के बावजूद वे अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। उन्होंने जंगलों में भटकना और घास की रोटियाँ खाना स्वीकार किया, परन्तु किसी के सामने अपना मस्तक झुकाना स्वीकार नहीं किया।
4. **त्याग और कष्ट-सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति:** उन्होंने मातृभूमि की रक्षा के लिए राजमहलों के समस्त सुखों का त्याग कर दिया और अपने परिवार के साथ जंगलों में कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत किया। उनका जीवन त्याग और सहिष्णुता की एक महान मिसाल है।
5. **भावुक हृदय :** यद्यपि वे बाहर से वज्र के समान कठोर थे, किन्तु उनका हृदय भावुक था। वे अपनी प्रजा और परिवार को कष्ट में देखकर दुःखी हो जाते हैं, परन्तु अपने कर्तव्य पथ से विचलित नहीं होते।

Quick Tip

उत्तर लिखते समय खण्डकाव्य के शीर्षक ('मेवाड़ मुकुट') को नायक के चरित्र से जोड़ें। प्रताप ने मेवाड़ के मुकुट (गौरव) की रक्षा के लिए ही अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

25(झ)(ii). 'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य के 'अरावली' सर्ग का कथानक संक्षेप में लिखिए ।

Solution:

'मेवाड़ मुकुट' खण्डकाव्य का 'अरावली' सर्ग इसका प्रथम सर्ग है। यह सर्ग हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात् की घटनाओं पर आधारित है और इसमें महाराणा प्रताप के अंतर्द्वंद्व, उनकी पीड़ा और दृढ़ प्रतिज्ञा का मार्मिक चित्रण है।

Step 1: The Setting:

हल्दीघाटी के युद्ध में पराजित होने के पश्चात् महाराणा प्रताप अपने परिवार सहित अरावली पर्वत की घाटियों में शरण लिए हुए हैं। वे अपनी मातृभूमि मेवाड़ की दुर्दशा और अपनी पराजय पर अत्यंत

दुःखी और चिंतित हैं।

Step 2: Pratap's Inner Turmoil:

उनकी पत्नी महारानी लक्ष्मी उनकी चिंता का कारण पूछती हैं। प्रताप उन्हें बताते हैं कि वे अपने भाई शक्तिसिंह के विश्वासघात और अपनी हार से व्यथित हैं। वे अपने व्यक्तिगत सुख-दुःख की चिंता नहीं करते, बल्कि उन्हें चिंता इस बात की है कि वे मेवाड़ को कैसे स्वतंत्र कराएंगे।

Step 3: The Resolve:

प्रताप अपने बच्चों को जमीन पर सोते और घास की रोटियाँ खाते हुए देखते हैं, जिससे उनका हृदय द्रवित हो उठता है। एक क्षण के लिए वे विचलित होते हैं, परन्तु अगले ही क्षण वे स्वयं को संभालते हैं। वे अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हैं कि जब तक वे मेवाड़ को शत्रुओं से मुक्त नहीं करा लेते, तब तक वे महलों में नहीं रहेंगे, पलंग पर नहीं सोएंगे और सोने-चाँदी के बर्तनों में भोजन नहीं करेंगे। यह सर्ग प्रताप की कष्ट-सहिष्णुता और उनकी अटूट देशभक्ति को दर्शाता है।

Quick Tip

किसी सर्ग का सारांश लिखते समय, उस सर्ग की प्रमुख घटना और पात्र के मुख्य मनोभाव को अवश्य उजागर करें। 'अरावली' सर्ग में मुख्य भाव 'प्रताप का अंतर्द्वंद्व और दृढ़ संकल्प' है।

26(क). निम्नलिखित लेखकों में से किसी एक का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

- (i) डॉ. राजेन्द्र प्रसाद
- (ii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
- (iii) भगवतशरण उपाध्याय

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय

हिन्दी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ आलोचक, निबंधकार एवं इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म सन् 1884 ई. में बस्ती जिले के अगोना नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. चन्द्रबली शुक्ल था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा हमीरपुर में हुई। इन्होंने मिशन स्कूल से फाइनल परीक्षा उत्तीर्ण की और प्रयाग के कायस्थ पाठशाला इण्टर कॉलेज में नाम लिखाया, किन्तु गणित में कमजोर होने के कारण इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण नहीं कर सके। बाद में इन्होंने मिर्जापुर के मिशन स्कूल में चित्रकला के अध्यापक के रूप में कार्य किया। यहीं पर इन्होंने हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, बांग्ला आदि भाषाओं का गहन अध्ययन किया।

'नागरी प्रचारिणी पत्रिका' का सम्पादन करते हुए इन्होंने अपार ख्याति प्राप्त की। वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष भी रहे। हिन्दी साहित्य का यह महान साधक सन् 1941 ई. में स्वर्ग सिधार गया।

Step 2: साहित्यिक परिचय एवं रचनाएँ

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी साहित्य में आलोचना और निबंध के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान प्राप्त

किया। वे एक प्रकांड विद्वान और मौलिक विचारक थे।

प्रमुख रचना : 'चिन्तामणि'

'चिन्तामणि' आचार्य शुक्ल के मनोवैज्ञानिक एवं समीक्षात्मक निबंधों का प्रसिद्ध संग्रह है, जो दो भागों में प्रकाशित है। इसमें क्रोध, ईर्ष्या, उत्साह, श्रद्धा-भक्ति जैसे मनोविकारों पर लिखे गए निबंध उनकी सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता और गहन वैचारिक चिंतन को दर्शाते हैं। इसके अतिरिक्त, 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' उनका एक ऐसा कालजयी ग्रन्थ है जो आज भी हिन्दी साहित्य के इतिहास-लेखन का मानक माना जाता है। 'रस मीमांसा' उनका एक अन्य प्रसिद्ध आलोचनात्मक ग्रन्थ है।

Quick Tip

जीवन-परिचय लिखते समय महत्वपूर्ण तथ्यों जैसे जन्म-मृत्यु, स्थान, माता-पिता का नाम, शिक्षा और प्रमुख कार्यों को क्रमबद्ध रूप से लिखें। साहित्यिक परिचय में लेखक की साहित्य में भूमिका और उनकी लेखन शैली पर प्रकाश डालें।

26(ख). निम्नलिखित कवियों में से किसी एक कवि का जीवन-परिचय देते हुए उनकी एक प्रमुख रचना का उल्लेख कीजिए :

- (i) सूरदास
- (ii) मैथिलीशरण गुप्त
- (iii) महादेवी वर्मा

Solution:

Step 1: जीवन-परिचय

वेदना की गायिका और 'आधुनिक युग की मीरा' के नाम से विख्यात महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोविन्द सहाय वर्मा और माता का नाम हेमरानी देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा प्रयाग में हुई। इन्होंने संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनका विवाह छोटी आयु में ही हो गया था, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सफल नहीं रहा। इन्होंने अपना अधिकांश जीवन प्रयाग में ही बिताया और 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्रधानाचार्या के पद पर कार्यरत रहीं। भारत सरकार ने इन्हें 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया। सन् 1987 ई. में इनका देहावसान हो गया।

Step 2: साहित्यिक परिचय एवं रचनाएँ

महादेवी वर्मा छायावादी युग की चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। इनके काव्य में विरह-वेदना और रहस्यवादी भावना की प्रधानता है। इन्होंने काव्य के अतिरिक्त उत्कृष्ट गद्य-रचना भी की है, विशेषकर रेखाचित्र और संस्मरण।

प्रमुख रचना : 'यामा'

'यामा' महादेवी जी का एक प्रसिद्ध काव्य-संग्रह है, जिसमें उनके चार प्रमुख काव्य-संग्रहों - 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा' तथा 'सांध्यगीत' के महत्वपूर्ण गीतों को संकलित किया गया है। इस कृति पर इन्हें हिन्दी साहित्य का सर्वोच्च पुरस्कार 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' प्राप्त हुआ था। इनके प्रमुख गद्य-ग्रन्थों में

'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ' और 'पथ के साथी' शामिल हैं।

Quick Tip

किसी कवि या लेखक को मिली उपाधियों (जैसे - 'आधुनिक युग की मीरा') और उन्हें प्राप्त पुरस्कारों (जैसे - ज्ञानपीठ, पद्म भूषण) का उल्लेख करने से जीवन-परिचय अधिक प्रभावशाली बनता है।

27. अपनी पाठ्य-पुस्तक के संस्कृत खण्ड की पाठ्यवस्तु से कण्ठस्थ कोई एक श्लोक लिखिए जो इस प्रश्न-पत्र में न आया हो।

Solution:

श्लोक :

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत् ॥

हिन्दी अनुवाद :

(सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त रहें। सभी का कल्याण देखें (सबका कल्याण हो) और किसी को भी दुःख का भागी न बनना पड़े।)

Quick Tip

परीक्षा के लिए कम से कम दो-तीन सरल और अर्थपूर्ण श्लोक अच्छी तरह याद कर लें ताकि यदि एक प्रश्न-पत्र में आ भी जाए तो आप दूसरा लिख सकें। श्लोक को बिना किसी वर्तनी की अशुद्धि के लिखने का अभ्यास करें।

28. छात्रावास की जीवन-शैली विषय पर अपने मित्र को पत्र लिखिए ।

अथवा

विद्यालय में खेल-कूद की सामग्री की ओर ध्यान दिलाते हुए प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना-पत्र लिखिए ।

Solution:

सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय,

(अपने विद्यालय का नाम),

(नगर का नाम) ।

विषय : खेल-कूद की सामग्री की व्यवस्था हेतु प्रार्थना-पत्र ।

महोदय,
सविनय निवेदन यह है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा दसवीं 'अ' का छात्र हूँ। मैं आपका ध्यान विद्यालय में खेल-कूद की सामग्री के अभाव की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।

विद्यालय में खेल-कूद की व्यवस्था तो है, परन्तु खेल-सामग्री की अत्यधिक कमी है। फुटबॉल कई जगह से फटी हुई है, वॉलीबॉल का नेट टूटा हुआ है तथा क्रिकेट के बल्ले और गेंदें भी बहुत पुरानी और खराब स्थिति में हैं। सामग्री के अभाव में हम छात्रों को अभ्यास करने में बहुत कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है।

अतः, आपसे विनम्र अनुरोध है कि कृपया विद्यालय में खेल-कूद की आवश्यक सामग्री की व्यवस्था कराने की कृपा करें, ताकि हम सभी छात्र खेल-कूद प्रतियोगिताओं के लिए उचित अभ्यास कर सकें और विद्यालय का नाम रोशन कर सकें।

आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य
(आपका नाम)
कक्षा - १० (अ)
दिनांक: (परीक्षा की तिथि)

Quick Tip

प्रार्थना-पत्र में प्रारूप (format) का विशेष ध्यान रखें। विषय स्पष्ट और संक्षिप्त होना चाहिए। पत्र की भाषा विनम्र और औपचारिक होनी चाहिए तथा अपनी बात को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना चाहिए।

29. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए :

- (i) श्वेतकेतुः कः आसीत् ?
- (ii) पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत् ?
- (iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?
- (iv) भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ?

Solution:

(i) श्वेतकेतुः कः आसीत् ?

उत्तर : श्वेतकेतुः आरुणेः पुत्रः आसीत् । (श्वेतकेतु आरुणि का पुत्र था ।)

(ii) पुरुराजः केन सह युद्धम् अकरोत् ?

उत्तर : पुरुराजः अलक्षन्द्रेण सह युद्धम् अकरोत् । (पुरुराज ने सिकन्दर के साथ युद्ध किया ।)

(iii) चन्द्रशेखरः स्वनाम किम् अवदत् ?

उत्तर : चन्द्रशेखरः स्वनाम 'आजादः' इति अवदत् । (चन्द्रशेखर ने अपना नाम 'आजाद' बताया ।)

(iv) भूमेः गुरुतरं किम् अस्ति ?

उत्तर : माता भूमेः गुरुतरा अस्ति । (माता भूमि से अधिक भारी/श्रेष्ठ है ।)

Quick Tip

संस्कृत के प्रश्नों का उत्तर देते समय प्रश्नवाचक शब्द (कः, केन, किम् आदि) के स्थान पर सही उत्तरवाची शब्द रखकर वाक्य को पूरा करें। उत्तर संक्षिप्त और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध होना चाहिए।

30. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए :

(i) जीवन में विज्ञान का महत्त्व

(ii) भारत में आतंकवाद : समस्या और समाधान

(iii) छात्र और अनुशासन

(iv) आजादी का अमृत महोत्सव

Solution:

1. प्रस्तावना

'अनुशासन' शब्द 'शासन' के पीछे 'अनु' उपसर्ग लगने से बना है, जिसका अर्थ है 'शासन के पीछे चलना'। अनुशासन का तात्पर्य नियमों का सही ढंग से पालन करना है। विद्यार्थी जीवन मनुष्य के जीवन का स्वर्णिम काल होता है। यह वह समय है जब उसके चरित्र का निर्माण होता है और भविष्य की नींव रखी जाती है। इस नींव को सुदृढ़ बनाने के लिए अनुशासन रूपी सीमेंट की आवश्यकता होती है। एक अनुशासित छात्र ही अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकता है।

2. विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्त्व

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का अत्यधिक महत्त्व है। अनुशासन ही छात्र को समय का सदुपयोग करना सिखाता है। एक अनुशासित छात्र अपनी दिनचर्या बनाता है और उसके अनुसार अपने पढ़ने, खेलने और सोने का समय निर्धारित करता है। इससे उसका शारीरिक और मानसिक विकास संतुलित रूप से होता है। अनुशासन छात्र में कर्तव्यनिष्ठा, आज्ञाकारिता और अच्छे चरित्र जैसे गुणों का विकास करता है। अनुशासन के बिना ज्ञान प्राप्त करना भी कठिन है। कक्षा में शान्त और अनुशासित रहकर ही

छात्र शिक्षक की बातों को भली-भाँति समझ सकता है।

3. अनुशासनहीनता के कारण और दुष्प्रभाव

आज के समय में छात्रों में अनुशासनहीनता एक बड़ी समस्या बनती जा रही है। इसके कई कारण हैं, जैसे - पारिवारिक संस्कारों की कमी, पश्चिमी संस्कृति का अंधानुकरण, मोबाइल और इंटरनेट का अत्यधिक प्रयोग, तथा नैतिक शिक्षा का अभाव। अनुशासनहीन छात्र न तो स्वयं का विकास कर पाता है और न ही समाज का। वह अपने लक्ष्य से भटक जाता है और उसका भविष्य अंधकारमय हो जाता है। अनुशासनहीनता समाज में अराजकता और अव्यवस्था को जन्म देती है।

4. उपसंहार

अनुशासन सफलता की कुंजी है। प्रकृति का कण-कण अनुशासन में बँधा है। सूर्य समय पर उगता है, ऋतुएँ समय पर आती-जाती हैं। यदि प्रकृति अनुशासन तोड़ दे तो प्रलय आ जाएगी। इसी प्रकार, यदि छात्र अनुशासनहीन हो जाए तो उसका जीवन नष्ट हो सकता है। अतः, प्रत्येक छात्र का यह परम कर्तव्य है कि वह अनुशासन के महत्त्व को समझे और उसे अपने जीवन में अपनाए। एक अनुशासित छात्र ही भविष्य में एक आदर्श नागरिक बनकर देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकता है।

Quick Tip

निबंध लिखते समय उसे अलग-अलग अनुच्छेदों (जैसे - प्रस्तावना, महत्त्व, कारण, उपसंहार) में बाँटना चाहिए। प्रत्येक अनुच्छेद में एक मुख्य विचार को प्रस्तुत करें। विषय से संबंधित किसी प्रसिद्ध सूक्ति या कविता की पंक्ति का प्रयोग करने से निबंध और भी आकर्षक हो जाता है।